पड़ रहा था, उसकी सारी जिन्दगी अन्धकारमय हो गई थी। जो लोग दूसरों की जिन्दगी में धुँआ भरते हैं उनको भी अपनी सारी जिन्दगी धुँए में बितानी पड़ती है। आने वाली पीढ़ियों को वह कुछ नहीं दे पाते हैं। उनकी आने वाली पीढ़ियाँ धुएँ में समा जाती हैं।

करिया पंडित, गोरा चमार बहुत खतरनाक होता है

हरिशंकर अवस्थी का व्यवहार अपनी बहिनों के प्रति बहुत ही प्रताड़ना देने वाला रहता था। वे घर के अन्दर ही रहती थीं। मजाल कि वे अटारी पर चढ़ कर किसी को निहार लें। मेरे घर की छत व हरिशंकर अवस्थी के घर की छत बराबर थी। केवल एक गली का अन्तर था। एक बार मैं अपनी छत पर टहल रहा था। वहाँ मैंने देखा, वह छत के ऊपर टहल रही अपनी खूबसूरत बहन को जोर-जोर से मुक्कों से मारते हुए जीने से होकर नीचे के कमरे में ले गया। उसको बाँध कर खूब मारा। उसके रोने की आवाजें खूब सुनाई पड़ रही थीं। वह चिल्ला रहा था। गाली दे रहा था। वास्तव में हरिशंकर अवस्थी दलितों के साथ जिस तरह अत्याचार करता था उसी तरह घर की औरतों के साथ खूब निर्दयता से पेश आता था। उसकी बहिन उसको देखकर काँपती थी। यही हाल ब्राह्मण उरेरी का भी था। वह भी जिस तरह कमजोर असहाय चमारों के साथ जूता-लात करता था, उसी तरह अपनी बहिनों के साथ भी मार-पीट करता था। पत्नी को भी प्रताड़ित करता था। यह काले रंग का ब्राह्मण था। जब मैं शिवमोहन चाचा से मिलने ब्राह्मणों की गली से होकर जाता था, ब्राह्मण मुझे गौर से निहारा करते थे। मेरे चलने के तरीके को कहते थे–

"साला! हीरा अकड़ कर चलता है।"

मेरा रंग गोरा है। मेरी ओर घूर कर शिवभजन अवस्थी कहता था–"करिया पंडित ग्वार चमार बहुत खतरनाक होता है।" मैं इस कहावत/कटाक्ष को उस समय नहीं समझ पाता था। कुछ दिन बाद मैं इस कहावत को समझा। एक ब्राह्मण के लड़के से मेरी दोस्ती भी थी। मेरा ब्राह्मण दोस्त ब्राह्मणों की चौपाल में उनकी बातें सुना करता था। फिर मुझे बताता था। एक बार हरिशंकर अवस्थी, उरेरी, शिवभजन, शिवदत्त सभी ब्राह्मण इस बात पर विचार कर रहे थे कि चमार, कोरी, खटिक सभी काले होते हैं। जो भी दलित गोरा हो तो समझ लो वह ब्राह्मणों की संतान है। तर्क यह देते थे जो बड़ा ही अजीब था। शिवभजन अवस्थी कहता था–

"दलितों की स्त्रियाँ जो सुन्दर होती हैं यदि किसी ब्राह्मण को भा गईं तो वे उसके साथ शारीरिक सम्बन्ध बना लेते हैं क्योंकि अधिकतर ब्राह्मण गोरे होते हैं।"

मैं इस बेवकूफी भरी ब्राह्मणों की सोच को काट करने की सोचने लगा। मैंने बहुत सोचा। फिर एक पासी भाई को एक ब्राह्मण के घर में काम करते देख एक विचार मेरे मन में आया। पासी भाई बहुत काला था। मैंने अपने दोस्त से कहा कि–

"आप यह बात शिवभजन अवस्थी को जरूर बताना कि ब्राह्मण काले क्यों होते हैं?" उसी समय शिवभजन अवस्थी बम्बे की पुलिया में आकर बैठ गया। हम लोग बम्बे की पुलिया के पास वार्तालाप कर रहे थे। उसने यह बात सुन ली कि ब्राह्मण काले क्यों होते हैं? वह जोर से बोला–"क्यों बे हीरा! ब्राह्मणों के काले होने का क्या कारण बता रहा है? तुझे सुप्तन ने दलितों के गोरे होने का कारण बताया कि नहीं। अगर नहीं बताया है तो मैं तुझे बता रहा हूँ, जिस ब्राह्मण का दिल किसी दलित औरत पर आ जाता है तो उसके सम्पर्क से दलित औरतों के जो संतानें पैदा होती हैं वे सभी गोरी होती हैं।"

मैंने कहा–"अब सुनिए ब्राह्मणों की संतानें काली क्यों होती हैं? दलित ब्राह्मणों के घरों में काम करते हैं, ब्राह्मण जब अपने घरों में नहीं होते हैं तो ब्राह्मणों की औरतें हट्टे-कट्टे बलवान दलितों पर मर मिटती हैं। उनके सम्पर्क से ब्राह्मण औरतों की जो संतानें उत्पन्न होती हैं वे काली होती हैं।"

इतना सुनते ही शिवभजन अवस्थी मुझे गाली देने लगा–"साले! ऐसा तर्क दे रहा है। तेरी जबान काट डालूँगा।"

यह कहकर वह मुझे मारने दौड़ा। मैं तेजी-से भागकर बड़े ताल निकल गया। शिवमोहन चाचा के ट्यूबवैल में जाकर रुका। वह भी दौड़ते-दौड़ते हाँफता हुआ शिवमोहन चाचा के ट्यूबवैल पर आ गया। शिवमोहन चाचा ने बीच-बचाव किया। शिवभजन अवस्थी अधेड़ था। मैं अठारह साल का लड़का था। शिवमोहन चाचा के बीच में पड़ने से उसका गुस्सा ट्यूबवैल से निकल रहे पानी की तरह बह गया। उसके साथ ही ब्राह्मणों का गरूर, नाली में तेजी से बह रहा था। वह ऐसा महसूस कर रहा था जैसे वह स्वयं नाली में बहा चला जा रहा हो। मैं और शिवमोहन चाचा यह महसूस कर रहे थे कि शिवभजन अवस्थी के अन्दर-बाहर सदियों से जमा मैल साफ हो रहा है। ट्यूबवैल से निकलने वाले सफेद पानी की धार तेज थी। समाज में जमे मैल को साफ करने के लिए ऐसे ही पानी की तेज धार की जरूरत है।

होली का बल्ला तरे तरे चमारिन चो....परे परे

गाँव में आज भी सामाजिक कुरीतियाँ इस प्रकार फैली हुई हैं जो आज के आजाद भारत के लिए बहुत ही खतरनाक हैं। चाहे कोई त्यौहार हो या जश्न मनाने का

अन्य कोई अवसर सभी जगह दबे-कुचले, कमजोर आदमी-औरतें निशाना होते हैं। गैर-दलित, दलितों का अपमान करके अपना मनोरंजन करते हैं। उनको ऐसा करने में बहुत ही मजा आता है। वे अपमानित होने वाले दलितों की मान-मर्यादा का कोई भी ध्यान नहीं रखते हैं। दलित औरतों को एक मनोरंजन का सामान समझते हैं। सवर्ण ऐसा क्यों करते हैं और दलित क्यों सुनते हैं? सवर्ण अपनी झूठी सर्वोच्चता कायम रखने के लिए ऐसा करते हैं। दलित कमजोर होने के कारण सुनते हैं क्योंकि वे आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक रूप से बहुत ही दयनीय होते हैं।

मेरे गाँव नसेनियां में होली जलाने के अवसर पर ऐसा ही दृश्य उपस्थित होता है। जहाँ पर सारी दलित औरतें अपमानित हो जाती हैं। मैं आपको गाँव में होली जलने के समय का सजीव चित्र प्रस्तुत करता हूँ। होली मेरे घर से थोड़ा दूर जलाई जाती है। मेरे गाँव में एक हफ्ते के अन्तराल में दूसरी होली जलती है। गाँवों में सवर्णों के लड़के सूखे और कुछ हरे पेड़ की शाखाएँ काटकर मेरे घर के पास इकट्ठा करते हैं। दलितों के छप्परों की सूखी लकड़ियाँ सवर्ण जबरदस्ती निकाल कर होली जलाए जाने वाले स्थान पर इकट्ठा करते हैं। यदि कोई दलित जरा सा भी उन्हें ऐसा करने से टोकता है तो मारपीट भी करते हैं। यदि कोई दलित औरत उन्हें मना करती है तो वे लोग उन्हें फूहड़-फूहड़ गालियाँ देते हैं।

''साली! हमें तू इसलिए मना कर रही है कि तू अपने पति के साथ जो रासलीला करती है कहीं दिखाई न पड़ जाए। डर मत खुले में रासलीला किया कर, तुम्हारी रासलीला देखकर हमें भी आनन्द आ जाएगा।''

ये बातें सुनकर दलित औरतें शर्म से झेंप जाती हैं। प्रतिरोध करना बन्द कर देती हैं। यदि उनके आदमी-लड़के सवर्णों को ऐसा करने से मना करते हैं तो मारपीट करने लगते हैं। औरतें और लड़कियाँ गोबर के बल्ले एक माह पहले से तैयार कर लेती हैं। होली के समय उनको आग में झोंका जाता है। गाँव के लोग ईख के बड़े डंठल पत्तियों सहित गन्ने के खेतों से तोड़ लाते हैं तथा जलती होली में उनको तपाते हैं। होली जलने पर लोग ढोल-मजीरा खूब बजाते हैं तथा होली की परिक्रमा करते हैं। उसी समय सवर्ण दलित औरतों को गाली देते हैं और जोर से बोलते हैं–

''होली का बल्ला तरे तरे, चमारिन चो ....परे, परे''

ये गालियाँ दलितों, उनकी औरतों और लड़कियों को सुनाई पड़ती हैं। शर्म से घरवालों से आँखें नहीं मिला पाती हैं। मैं इन गालियों को सुन कर विचलित हो जाता। सभी दलित औरतें, लड़कियाँ अपने-अपने कानों में रूई ठूँस लेती हैं। होली के चारों ओर परिक्रमा करते समय सवर्ण खुशी का संगीत बजाते हैं। लेकिन यह संगीत दलितों के लिए मातम का संगीत बन जाता है।

मैं समझता हूँ कि त्यौहारों में बुराई को जलाना चाहिए। असमानता, भेदभाव, छुआछूत, जातिवाद को जलती होली में झोंक देना चाहिए। यदि हम ऐसा करते तो मानवता, भाईचारा, प्यार, मौहब्बत, साम्प्रदायिक, सद्भावना की लपटें आसमान तक उठतीं और संसार के सामाजिक अंधकार को दूर कर देतीं। लेकिन त्यौहारों में सामाजिक अंधकार दूर करने की बातें नहीं होती हैं, बल्कि सामाजिक अंधकार फैलाने की बात होती है। होली में सामाजिक अच्छाई को जलाकर सामाजिक बुराइयों की लपटें आसमान तक उठती हैं। इन लपटों में कमजोर असहाय जलता है। सबल, समृद्धशाली, बर्बर अपने घमण्ड और गरूर में अट्टहास करता है। ये अपमान की लपटें सदियों से तेजी से उठती रही हैं जिनमें दलित औरतों, बच्चों और उनका मान-सम्मान, स्वाभिमान जलता रहा है।

दलित कब तक अपने गौरव को जलाता रहेगा? दलित औरतें कब तक ऐसी होली में भुनती रहेंगी और सवर्ण व्यभिचारियों का ग्रास बनती रहेंगी? दलित बच्चे कब तक हीन भावना का शिकार होते रहेंगे? अपने माँ-बाप को अपंग, अपाहिज और उनके चेहरों पर मायूसी, लज्जा, तिरस्कार, अपमान देखकर कब तक भयभीत रहेंगे।

मैंने अपने गाँव के दलित नौजवानों, यादवों और कुर्मियों का सहयोग लिया। कुर्मियों से हमें उनके बच्चों का सहयोग लेने में एक दिक्कत आ रही थी। एक-आध परिवारों के कुर्मी, ब्राह्मणों के सदैव सम्पर्क में रहते थे। ब्राह्मण सदैव आपस में कुर्मियों को कुर्मियों से लड़वाया करते थे। एक-आध घर के कुर्मी, ब्राह्मणों के सम्पर्क में रहकर उनकी ही तरह व्यवहार करने लगे थे। होली में एक गुंडा कुर्मी इन्दरजीत सिंह हरदम फरसा लिए ब्राह्मणों के साथ रहता था। ब्राह्मणों ने उसके मन-मस्तिष्क को अपने अनुसार ढाल लिया था। उसका बिल्कुल 'ब्रेन वाश' कर दिया था। वह भी ब्राह्मणों की तरह व्यवहार करता था। होली की परिक्रमा करते समय वह भी दलित औरतों को ब्राह्मणों के साथ गाली दे रहा था। लेकिन मेरे एक मित्र सुरेन्द्र सचान ने उसको समझा दिया कि चाचा आप ब्राह्मणों के साथ न शामिल हों। वह तुरन्त होली में बल्ले डालकर घर चला गया। उसे अपनी गलती का एहसास हुआ। उसने गाली नहीं दी। लेकिन ब्राह्मण गाली दे-देकर होली के चक्कर लगा रहे थे। उरेरी मिश्रा ने ब्राह्मण लड़कों को उकसाया और दलित औरतों को गाली देने को कहा। उरेरी ने पहली गाली दी–

''होली का बल्ला तरे-तरे''
खटिकिनिया चो–परे परे''
हरिशंकर अवस्थी ने दूसरी गाली दी–
''होली का बल्ला तरे-तरे
पासिनिया चो–परे परे''

शिवभजन अवस्थी भी मजा लेते हुए एवं उछलकर बोला–

'होली का बल्ला तरे-तरे
भंगनिया चो–परे-परे''

सभी नौजवान लड़के चिल्ला रहे थे।

बुरा न मानो होली है।
बामन का त.. पसेरी है।
दलित औरतों की बारी है।

सवर्ण ये गालियाँ दे-देकर खूब हो-हल्ला कर रहे थे। नाच रहे थे। ईख के डंडों को जलती होली में पटक-पटक कर पीट रहे थे। मैं यह सब बरदाश्त नहीं कर पा रहा था। मैं जलती होली के समक्ष इस नंगा-नाच को देखकर कुछ कर नहीं पा रहा था। जब सवर्ण दलित औरतों को गाली देते थे तब मैं मन मसोस कर रह जाता था। होली के नाम पर ऐसा तांडव नृत्य जारी था। पैरों में बँधा घुंघरू का गुच्छा जोर-जोर से आवाज कर रहा था। उस गुच्छे की एक एक घुँघरू एक-एक एटम बम के बराबर थी, जिसमें सामाजिक विद्वेष, घृणा, ऊँच-नीच की भावना, छुआछूत रूपी बारूद भरी थी। जब-जब एक-एक घुँघरू रूपी बम टूटता था तो न जाने कितने दलितों, दलित औरतों के चीथड़े-चीथड़े कर देता था। ऐसे बमों की मार व उनके दुष्प्रभाव से दलित संतानें सामाजिक अपंगता लिए पैदा होती हैं और होती रहेंगी। अमेरिका द्वारा नागासाकी और हिरोशिमा में गिराए गए बमों का दुष्प्रभाव इतना भयंकर नहीं था जितना प्रभाव इन सामाजिक बमों का दलितों पर पड़ा है।

मैं इन बमों की मार को रोकना चाहता था। मैं विरोध में इस प्रकार के बमों का प्रयोग नहीं करना चाहता था। जिससे मनुष्य जाति व कोई भी औरत अपमानित हो। लेकिन कभी-कभी विष का काट विष ही होता है। यह कहावत मुझे याद थी। क्योंकि ऊधमी ब्राह्मण समझने वाले नहीं थे। उनको उसी भाषा में समझाना जरूरी था, जिस भाषा को वह अच्छी तरह जानते थे।

जननायक अम्बेडकर के संघर्ष ने मुझे संघर्ष करने की प्रेरणा दी

एक सप्ताह के अन्तराल में दूसरी होली जलने वाली थी। वहाँ सवर्णों द्वारा दलित औरतों को अपमानित करने वाली गालियाँ दोहराई जाने वाली थीं। मैं बहुत चिन्तित था। गाँव की इस कुप्रथा को तोड़ना चाहता था। मैंने दलित भाइयों का सहयोग लिया। मैं चमार टोला जा-जाकर मीटिंग करने लगा तथा दलित नौजवानों के साथ सवर्णों के विरुद्ध लड़ने की एक रणनीति तैयार कर ली थी। इस रणनीति में हम मारे भी जा सकते थे। लेकिन बिना कुर्बानी दिए कोई भी चीज इस संसार में उपलब्ध नहीं हुई है। सफलताएँ उन्हीं लोगों को मिलती हैं जो संघर्ष करना

जानते हैं। हालांकि संघर्ष में दोनों पक्षों को हानि उठानी पड़ती है। प्रथम पक्ष समाज में विसंगतियाँ बनाए रखने के लिए अडिग है। दलित यानी दूसरा पक्ष समाज में विसंगतियाँ मिटाने के लिए लड़ता है। अगर विसंगतियों को चुपचाप सहन करता है तो वह तब भी मरता है। चुपचाप रहने पर भी उसकी हार होती है। अगर वह विसंगतियों को समाप्त करने के लिए क्रूर सवर्णों से संघर्ष करता है तो वह हारकर भी जीतता है। वैसे आज तक गैर-बराबरी के विरुद्ध जितने भी संघर्ष हुए हैं ऐसे सघर्षों ने जनमानस की आँख खोली है। बहुत कुछ गैर-बराबरी को समाज से मिटाया है। जीत दलितों की हुई है। डॉ. अम्बेडकर अकेले थे। उन्होंने अकेले ही सारे देश से गैर-बराबरी के खिलाफ संघर्ष किया था। उनके तेज के सामने गाँधी, जवाहर की चमक धीमी पड़ गई थी। इन लोगों ने भी मानवता के प्रति किए गए डॉ. अम्बेडकर के कार्यों को सही माना था। पीड़ित बहुसंख्यक मानवता के प्रति हमदर्दी रखने वाले विश्व के एकमात्र जननायक अम्बेडकर ही थे। यदि वे संघर्ष से डर जाते तो दलित जिस स्थिति में आज हैं कभी न होते।

डॉ. अम्बेडकर के ये विचार मुझे बार-बार कचोट रहे थे। मुझे संघर्ष करने के लिए प्रेरित कर रहे थे। मैंने दलित नौजवानों की टोली बना ली थी। यह निर्णय लिया था कि सवर्णों को विशेषकर उरेरी मिश्र, हरिशंकर अवस्थी, शिवभजन अवस्थी, शिवदत्त मिश्र को सबक जरूर सिखाया जाएगा।

''होली का बल्ला तरे तरे
पंडिताइन चो ..... परे परे''

मैंने तय कर लिया था कि आज की होली में समाज में फैली इन कुप्रथाओं को जला कर राख कर दूँगा। उनका नामोनिशान मिटा दूँगा। या तो वे कुप्रथाएँ शहीद होंगी या दलित शहीद होंगे। मेरे साथ अन्य दलित साथी थे। हम लोग 12 नौजवान गन्ने के बड़े-बड़े डंठल लिए खड़े थे। ब्राह्मणों को इस बात का आभास नहीं था कि हम कोई उनका प्रतिरोध करने वाले हैं।

उरेरी मिश्र बोला–

''होली का बल्ला तरे तरे
चमारिन चो.... परे परे''

मैंने सभी दलित लड़कों से जवाबी नारा लगाने को कहा–

''होली का बल्ला तरे तरे
पंडिताइन चो... परे परे''

उरेरी मिश्र सहित सभी ब्राह्मण अचम्भे से देखने लगे। सभी दलितों को आँख फाड़-फाड़ कर घूरने लगे। सवर्ण समझ नहीं पा रहे थे कि यह क्या हो रहा है। हरिशंकर अवस्थी, शिवभजन अवस्थी, शिवदत्त मिश्र सभी हक्के-बक्के होकर कुछ समय के लिए खड़े रहे। फिर उरेरी मिश्र मुझे खा जाने वाली नजरों से आँखें

मिलाते हुए बोला–"साले हीरा! तू पागल हो गया है, यह क्या कर रहा है?"

मैंने कहा–"मैं क्या कर रहा हूँ? जो आप लोग कर रहे हैं वही तो मैं कर रहा हूँ?"

जलती होली की लपटों में सभी सवर्ण दिखाई दे रहे थे। उनका घमंड, ऊँची जाति होने का गरूर धीरे-धीरे होली में दलितों द्वारा झोंक दिया गया था जो होली में जल रहा था। सभी ब्राह्मण अपने झूठे उच्च कुल के अभिमान को सम्पूर्ण जलने से बचा नहीं पा रहे थे। सभी ब्राह्मण पागलों की तरह दलितों पर झपटने लगे। दलित भी तैयारी करके आए थे। दलित कमजोर नहीं थे। एक नौजवान दलित (मेरा) का नेतृत्व उनके साथ था, जिनको उसने मीटिंग कर उनको जाँबाज सिपाही बना दिया था। वे दलितों का स्वाभिमान बचाने के लिए एक भयंकर युद्ध करने को तैयार थे।

उरेरी मिश्र बोला–"साले खटिको! चमारो! पासियो! कोरियो! तुम हमारी बराबरी करोगे।"

मैंने कहा–"क्यों नहीं बराबरी करेंगे। यदि तुम हमारी माँ-बहिनों को हम लोगों के सामने गाली दोगे तो हम भी तुम्हारे सामने तुम्हारी माँ-बहिनों को गाली देंगे।"

हरिशंकर अवस्थी बोला–"अगर साले! तुम लोगों ने एक भी बात हमारी माँ-बहिनों के खिलाफ निकाली तो तुम्हारी सभी की जीभें काटकर होली में बल्ले की तरह जला देंगे"

मैंने कहा–"जीभ तुम्हारे भी है। यदि तुमने भी दलित औरतों के खिलाफ कोई गाली दी तो तुम्हारी भी जीभें काटकर होली में भून डालेंगे।"

शिवभजन अवस्थी बोला–"अच्छा देखते हैं मादरचोदो! तुम लोग कैसे हमारी लड़कियों और औरतों को गाली देते हो...."

उसने आगे भी सभी ब्राह्मणों से दलित औरतों को बारी-बारी से गाली देने को कहा–

"होली का बल्ला तरे तरे
खटिकिनिया चो...परे परे"
मैंने सभी दलितों से कहा–उत्तर दो
"होली का बल्ला तरे-तरे
बामनिया चो....परे परे"
दलित नौजवान जोश में चिल्ला रहे थे–
"बुरा न मानो होली है
दलितों का लं.... पसेरी है
बामन औरतों की बारी है।"

यह सुनकर सभी ब्राह्मण ईख के डंडों से दलितों पर प्रहार करने लगे। दलित भी अपने मोटे-मोटे ईख के डंडों से उन पर जवाबी हमला करने लगे। ब्राह्मणों और दलितों में खूब मार-पीट हुई। एक-दूसरे को जलती होली में फेंकने लगे। जलती होली के चारों ओर 'गन्नों का डंठल युद्ध' शुरू हो गया। ऐसा लगता था कि डब्लू-डब्लू-डब्लू की रेसलिंग चल रही है। भयंकर आग की लपटें इस युद्ध को और भी भयंकर बना रही थीं। ब्राह्मणों को आग की लपटें ज्यादा प्रभावित कर रही थीं क्योंकि वे लोग अभी तक दलितों को, अत्याचारों की लपटों में तपाते रहे थे। पहली बार वे अत्याचारों के प्रतिरोध की लपटों से झुलस रहे थे। दलित अत्याचारों की लपटों से सदियों से झुलसते आए थे। उनके शरीर फौलाद के बन गए थे। उनमें होली की लपटों का कोई भी असर नहीं हो रहा था। जब एक-दूसरे पर प्रहार करते-करते गन्ने टूट गए थे तब दलित और ब्राह्मण एक-दूसरे पर लिपट पड़े थे। दोनों मुक्का-जूता लात पर उतारू हो गए। दोनों पक्षों के लोग बेरहम हो गए थे। एक-दूसरे को ढकेल कर जलती होली में झोंकने लगे। कई दलित होली में गिर कर झुलसे। कई ब्राह्मण भी होली में गिरकर झुलसे।

'गन्नों का डंठल युद्ध' वास्तव में अपनी तरह का एक अनोखा युद्ध था। गाँव वालों ने इस युद्ध के बारे में कभी सोचा नहीं था। कभी भी देखा नहीं था। पहली बार वे इस भयंकर युद्ध को देख रहे थे और महसूस कर रहे थे कि वास्तव में अत्याचारी कौन है? कौन सत्य की राह पर है और कौन असत्य की। कुर्मी, यादव, ठाकुर इस युद्ध के दर्शक थे। वे किसी भी पक्ष की तरफ से भाग नहीं ले रहे थे। ब्राह्मण समझ रहे थे कि कुर्मी और यादव उनके पक्ष की तरफ से युद्ध करेंगे। लेकिन कुर्मी और यादव शायद महाभारत काल के कृष्ण की भूमिका में थे। बलवीर सिंह यादव और ठाकुर महाराज सिंह कृष्ण बन कर वहाँ प्रकट हुए, दोनों पक्षों को समझाया और युद्ध बंद कराया। वे दोनों बोले–"होली का त्यौहार आपस में प्यार, मोहब्बत और सौहार्द्र बनाए रखने के लिए मनाया जाता है। तुम लोग आपस में झगड़ा करके इस त्यौहार को खूनी बना रहे हो।"

उरेरी मिश्र हाँफते हुए बोला–"ये साले! खटिक, चमार, कोरी, पासी हमारी बराबरी कर रहे हैं। हम लोग दलित औरतों को गाली देकर खुशियाँ मना रहे हैं। ये साले! हमारी माँ-बहिनों को भी गाली देकर सदियों से चली आ रही परम्परा को तोड़ रहे हैं।"

बलवीर सिंह यादव गुस्सा होते हुए बोले–"दलित औरतों को होली के अवसर पर गाली देने की कौन-सी परम्परा है।"

"होली में यह शुभ माना जाता है।"

हीरा ने कहा–"यह इनके लिए परम्परा शुभ हो सकती है। हमारे लिए यह

परम्परा अशुभ है। संसार भर में ऐसी क्रूर प्रथा कहीं नहीं है जहाँ पर औरतों को अपमानित करके जश्न मनाया जाए।"

हरिशंकर अवस्थी अपना जला हुआ हाथ उठाते हुए बोला—"अभी तक इन दलितों ने हमारी गालियाँ सुनी हैं जो हम होली के अवसर पर हँसी-मजाक में इनकी औरतों और लड़कियों को देते आए हैं। पहली बार ये लोग हमारी माँ-बहिनों को भी गाली दे रहे हैं। हम लोग इसको कैसे बरदाश्त कर सकते हैं।"

मैंने कहा—"यदि तुम लोगं हँसी-मजाक में हमारी माँ-बहिनों को गाली दे रहे हैं तो हम लोग भी हँसी-मजाक में तुम्हारी माँ-बहिनों को गाली दे रहे हैं। फिर आप लोग बुरा क्यों मान रहे हैं?"

शिव भजन अवस्थी बोला—"यह एक नई परम्परा होगी। सदियों से चली आ रही परम्परा को बदल नहीं सकते हैं।"

मैंने कहा—"जो परम्परा दलितों के मान-सम्मान, उनकी माँ-बहिनों की बेइज्जती करेगी हम उन सभी परम्पराओं को बदल देंगे।"

बलवीर सिंह यादव ने ब्राह्मणों को समझाते हुए कहा—"आप लोग दलित औरतों को गाली-गलौज देने की पुरानी परम्परा को बंद कर दो। ब्राह्मणों की औरतों को दलितों द्वारा गाली देने की नई परम्परा अपने आप बंद हो जाएगी।"

सवर्ण अपनी औरतों को नंगा होते देख हतप्रभ

जो रोल श्रीकृष्ण ने महाभारत काल के युद्ध में निभाया था वही रोल बलवीर सिंह यादव निभा रहे थे। श्रीकृष्ण, कौरवों और पांडवों का युद्ध रुकवा नहीं पाए थे, न जाने कितने लोगों का नरसंहार हुआ था। वहाँ पर भी एक पांचाली की इज्जत दाँव पर लगी थी। यहाँ पर भी दलित औरतों की इज्जत दाँव पर लगी थी। वहाँ केवल एक औरत नंगी हुई थी। यहाँ पर असंख्य औरतें नंगी हो रही थीं। श्रीकृष्ण ने केवल एक औरत को नंगा होने से बचाया था। बलवीर सिंह यादव असंख्य औरतों को नंगा होने से बचा रहे थे। जो काम महाभारत काल में श्रीकृष्ण नहीं कर पाए थे। वह काम बलवीर सिंह यादव ने दलितों और ब्राह्मणों के 'गन्नों का डंठल युद्ध' रुकवा कर, कर दिखाया था।

मैंने कहा—"हमारा उद्‌देश्य ब्राह्मणों की औरतों को गाली देना नहीं है। हमारा उद्‌देश्य अपनी औरतों को अपमानित होने से बचाना है। हम तो यह भी चाहते हैं कि औरत-औरत होती है, चाहे वह दलित हो या गैर-दलित। सभी औरतों की गरिमा, मान-सम्मान की रक्षा करना हम सभी का कर्तव्य है। ब्राह्मणों को नसीहत सिखाना था। समाज में अपमानित करने वाली परम्पराओं को बंद करना मात्र दलितों का उद्‌देश्य है।"

ठाकुर महराज सिंह झुलसे हुए दलितों, ब्राह्मणों को ट्रैक्टर में लादकर पास के छोटे से कस्बा जहानाबाद ले गए।

जलती होली के सामने सभी नौजवान दलितों ने मुझको कंधों पर उठा लिया था। सभी होली के चारों ओर नाच रहे थे। वाल्मीकि भाई जोर-जोर से ढोल बजा रहे थे। सभी दलित अपने वाद्य यंत्रों से खुशी की धुनें निकाल रहे थे। इस जश्न के माहौल में ठाकुर, यादव और कुर्मी शामिल हो गए थे। कुर्मी और यादव ढोलक मजीरा बजा-बजा कर होली का 'फाग' गा रहे थे।

त्यौहार है वही
लेकिन बदल गए हैं
मनाने के ढंग
मानव और दानव में
छिड़ गई है जंग
दानवी पुतले
सजीव हो गए हैं
और वर्तमान दानवों से
आकर मिल गए हैं
इसीलिए त्यौहारों में
नेक इंसान ही जल रहे हैं
अब ऐसा नहीं होगा
सामाजिक बुराइयाँ नहीं होंगी
केवल अच्छाइयाँ ही रहेंगी
उनकी रोशनी
हर जगह फैलेगी

गाँव का तिवारी परिवार

ब्राह्मण गली में अवस्थी और पाण्डेय के घरों के बीच में एक सीधा-साधा तिवारी परिवार रहता था। वह परचून की दुकान भी करता था। खेती को बटाई पर देता था। परचून की दुकान बहुत चलती थी। उसकी दुकान में साबुन से लेकर सारी घर-गृहस्थी के रोज की इस्तेमाल की चीजें रहती थीं। शायद यह परिवार ब्राह्मणों के अन्य परिवारों से भिन्न था। दलितों पर अत्याचार नहीं करता था। इसका सबसे बड़ा कारण यह था कि यह परिवार अत्याचारी परिवार के साथ बैठकर चौपाल नहीं लगाता था। इसका सबसे बड़ा कारण यह भी था कि वह अपनी दुकान चलाने में व्यस्त रहता था। उसका एक लड़का सुन्ना था। वह भी बहुत सीधा-साधा था।

उसको मैंने कभी भी किसी से ऊँची आवाज में बोलते हुए नहीं देखा। वह बहुत चुपचाप रहता था। शायद उसने हाई स्कूल, इण्टर की पढ़ाई कानपुर शहर से की थी। गाँव के ब्राह्मण कानपुर शहर में मुनीमगीरी करना बहुत पसन्द करते थे। तिवारी के बड़े लड़के ने इण्टर करने के बाद एक बहुत बड़े सेठ के यहाँ मुनीमगीरी कर ली। वह इतने मेहनत से काम करने लगा कि सेठ का व्यवसाय बहुत तरक्की करने लगा। वह लड़का हिसाब-किताब में बहुत माहिर था। अपनी योग्यता के कारण नौजवान सेठ और उसकी पत्नी को बहुत प्रभावित किया। तिवारी का लड़का पूरी तरह से उस करोड़पति सेठ के परिवार का हिस्सा बन गया था। कोई भी कार्य सेठ बिना उसकी सलाह के नहीं करता था। सेठ लाखों रुपये लेकर कानपुर के आस-पास के जिलों में ग्राहकों से पैसा वसूलने और माल सप्लायर्स को पैसा देने अकेले जाता था। जब उसने तिवारी के लड़के का पूरा विश्वास जीत लिया तो एक बार ग्राम नसेनियां से होकर दूसरे जिले जा रहा था। कई लाख रुपये उसके पास थे। कानपुर से विलम्ब से चलने के कारण ग्राम नसेनियां पहुँचते-पहुँचते रात हो गई। सेठ, तिवारी जी के घर में रुका। उसकी खूब-आवभगत की गई।

इस पृथ्वी पर रहने वाले सभी प्राणियों को जानना मुश्किल है कि कौन, कब, कहाँ, कौन-सा दाँव चल जाए। राजा, महाराजा, धनाढ्य आदमी सदैव अति विश्वास के कारण धोखा खाते रहे हैं। बड़े-बड़े राज्य और बड़े-बड़े राजा अपने निकट सम्बन्धियों द्वारा धराशायी किए गए हैं। कुटिल आदमियों की कुटिल चालें सीधे-साधे सज्जन, निर्दोष लोगों को मौत के घाट उतारती रही हैं। सीधा-साधा दिखने वाला आदमी अन्दर से कितना क्रूर होता है उसकी असलियत खुलने पर ही पता चलता है। उस आदमी के बारे में तब तक आदमी कुछ नहीं जान पाता है जब तक वह अपना खेल, खेल नहीं लेता है।

सम्भवतया घर की परचून की दुकान चलाने वाला आदमी अपने लड़के के साथ कोई ऐसा खेल खेलने वाला था। जिसकी भनक उस अतिथि को नहीं थी या उस लड़के द्वारा चुपचाप कोई षड्यंत्र रचा जाने वाला था जिसकी भनक उसके पिता को नहीं थी। ऐसा मैं नहीं मान सकता हूँ। घर में तीन-चार ही प्राणी थे। अतिथि को एक कमरे में सुला दिया गया था। पिता और पुत्र गहन विचार कर रहे थे। अतिथि को किस तरह मौत के घाट उतार कर उसके सारे रुपये हड़प लिए जाएँ या तो उसे स्वयं मारें या किसी को हायर करें।

एक माह बाद गाँव में पुलिस आई और उस तिवारी के लड़के को पकड़ कर ले गई। क्योंकि सेठ एक माह तक घर नहीं पहुँचा था। गाँव में जोर की चर्चा थी कि तिवारी के लड़के ने उसको मार कर उसके सारे रुपये हड़प लिए थे।

तीस-पैंतीस वर्ष पहले की यह घटना वास्तव में एक ऐसी घटना थी जिसको तिवारी जैसा सीधा-सादा परिवार कभी भी अंजाम नहीं दे सकता था। एक सीधे-साधे आदमी को किसी दूसरे आदमी का अति विश्वास करने के कारण जान गँवानी पड़ी थी। ऐसी घटनाएँ शहर में तो हो सकती थीं लेकिन देहातों में नहीं। कहते हैं देहात का आदमी बहुत सीधा-साधा होता है। अतिथियों का बहुत सत्कार करता है। उपकार के बदले उपकार करता है। लालच के आगे देहातों की यह संस्कृति कहाँ गायब हो जाती है? क्या कोई दलित इस तरह की घटना को अंजाम दे सकता था जो परिवार उसको अपना लड़का मानने लगा था। वह परिवार का हिस्सा बन गया था।

मेरे गाँव के ब्राह्मण ही ऐसा कर सकते थे। तिवारी ने ऐसा करके दिखा दिया। उसने शहरों की सभ्यता को मात दे दिया था। ऊपर से सज्जन दिखने वाला यह तिवारी का लड़का वास्तव में गाँव के अन्य अत्याचारी ब्राह्मणों से ज्यादा क्रूर निकला। ज्यादा चालाक, ज्यादा लालची, ज्यादा बेरहम साबित हुआ। शायद सेठ ब्राह्मण या गुप्ता था। जो आदमी कम बोलता है उसके अन्दर ज्यादा जहर होता है। कम बोलनेवाले आदमियों के अन्दर अमृत भी होता है। लेकिन इनकी संख्या गिनती की है। ऐसे आदमियों से सदैव होशियार रहिए जो बहुत कम बोलते हैं। वे लोग अपनी ऊर्जा अपने किसी लक्ष्य को पाने में लगाते रहते हैं। ऐसे आदमियों के लक्ष्य अपने तक सीमित रहते हैं। समाज की भलाई करने के लिए नहीं होते हैं। ऐसे आदमी घोटालेबाज, फरेबी और कातिल बलात्कारी भी होते हैं। आप इनकी योजनाओं को जान नहीं सकते हैं।

समाज में फैले ऐसे लालची, विश्वासघाती कातिलों से बचने के लिए सरकार ने एक स्थान से दूसरे स्थान तक रुपये-पैसे ले जाने के लिए नए वैज्ञानिक तरीके ईजाद किए हैं। ट्रैवलिंग या टूरिस्ट चैक, बैंक ड्राफ्ट आदि। आजकल तो एटीएम की सुविधा हर जगह उपलब्ध हो रही है। कैश कार्ड भी अहम् भूमिका निभा रहे हैं।

गाँव में जादूगरों का कमाल

मेरे गाँव में मजमा लगाकर देहाती जादूगर जादू दिखाने आया करते थे। गाँव वाले उनके करतबों को देखकर आश्चर्यचकित रह जाते थे। उनके जादू आज के पी. सी. सरकार की याद दिला देते हैं। जादूगर अपना मजमा कुर्मियों के मोहल्ले/गलियों में लगाया करते थे। एक आदमी ढोल जोर-जोर से बजाता था। ढोल की आवाज को सुनकर अधिकतर पिछड़े और दलित इकट्ठा होने लगते थे। एक जादूगर अपने दोनों पैरों में 24 फीट लम्बे-लम्बे बाँस के डंडे अपने पैरों में बाँधता था। उन डंडों

के सहारे पूरे गाँव का चक्कर लगाता था। घरों की छतों से भी ऊँचा दिखाई देता था। गाँव के कुत्ते उसको देखकर खूब भौंकते थे एवं उसके पीछे-पीछे दौड़ते थे। गाँव के छोटे लड़के-लड़कियाँ भी उसके पीछे-पीछे हो-हो हल्ला करते हुए भागते थे। वह आदमी पूरे गाँव की गलियों में घूमता था। केवल ब्राह्मणों की गली से नहीं गुजरता था। यादवों और चमार टोला होते हुए फिर कुर्मियों की गली में आ जाता था जहाँ उसका उस्ताद करतब दिखाने वाला था। बाँस के सहारे सबसे ऊँचे आदमी को चलते देखने के लिए सभी औरतें और लड़कियाँ घरों से निकलकर दरवाजे पर आ जाती थीं। वह बाँस बाँधे हुए डांस भी करता था। बाँस के बड़े-बड़े डंडे पैरों में बाँधकर उसका गाँव में चक्कर लगाने का मकसद अधिकतर गाँव वालों को उसका तमाशा देखने के लिए कुर्मियों की गली में इकट्ठा करना होता था।

गाँव वालों का बहुत बड़ा मजमा लग जाता था। ऐसे मजमे गाँव में स्वस्थ मनोरंजन पैदा करते हैं। ऐसे मजमों में कोई अश्लीलता नहीं होती है। ऐसे करतब देखकर ग्रामीणों को बहुत आनन्द आता है। खेती-बाड़ी का काम करते-करते किसान और मजदूर थक जाता है। उसके पास अपने लिए समय नहीं बचता है। ऐसे मनोरंजन उनको बहुत राहत देते हैं। उस्ताद एक ऐसा खेल दिखाता है कि गाँव वाले दाँतों तले उंगलियाँ दबा लेते हैं।

एक बारह साल के लड़के को एक जाल की बोरी में बाँध देते हैं। जैसे कच्चे आमों के ढेर को एक बड़े जाल में बाँध कर रस्सी से गाँठ लगा देते हैं। उसी तरह लड़के को जाल में बाँधकर गाँठ लगा दी जाती है। फिर लड़के को एक लकड़ी या आयरन के संदूक के अन्दर रखा जाता है। संदूक में ताला लगा दिया जाता है। इसी बीच ढोल खूब वजता है। फिर पाँच मिनट बाद ताला खोला जाता है। लड़का गायब पाया जाता है। वह मजमे के अन्दर से ग्रामीणों के बीच से निकलता पाया जाता है। मेरी आँखें यह सब विश्वास नहीं करती हैं। लेकिन ऐसा करतब देखकर विश्वास करना पड़ता है। सभी गाँव वाले जो यह तमाशा देखते हैं अपने-अपने घरों से अनाज उस जादूगर को देते हैं। ये जादूगर आमतौर पर दलित वर्ग के होते हैं। जोखिम भरे काम करके रोजी-रोटी का जुगाड़ कर लेते हैं। आसमान में रस्सी के ऊपर बाँस के डंडे के सहारे चलना आम बात है। लेकिन एक कलाकार द्वारा एक जोखिम भरा करतब देखकर मैं दंग रह गया था। बहुत वजनी लोहे के फार (तीन बड़े-बड़े चाकू एक साथ बाँध कर) एक डंडे के ऊपर रखकर बहुत ऊँचाई से अपने ऊपर लेटकर गिराना बहुत जोखिम भरा खेल होता है। लेकिन दलित इस खेल को खेलते हैं।

इन खेलों की चर्चा घर-घर में हो जाती है। एक बार जब खेल कुर्मियों की गली में चल रहा था और आदमी बाँस के ऊपर नाच रहा था। ब्राह्मणों के लड़कों ने अपने परिवारवालों को बताया। ब्राह्मणों की लड़कियाँ और औरतें ब्राह्मणों से

ऐसा खेल देखने के लिए जिद्द करने लगी। ब्राह्मणों की पर्दानशीन औरतों को कहीं जाने नहीं दिया जाता था। वे यदि दिशा मैदान जाती थीं तो पर्दा ओढ़कर जाती थीं। उनके घरों में रोज सफाई करने वाले टट्टीघर हैं। रोज मेहतर व उनकी औरतें उनके टट्टी घरों की सफाई करती हैं। यह चीज मुझे बहुत कचोटती रहती है। वाल्मीकि या मेहतर या भंगी (शहरों में इस जाति के पढ़े-लिखे लोगों को वाल्मीकि, देहातों में मेहतर व भंगी कहा जाता है।) दूसरे घरों में टट्टी साफ करने वालों को बहुत ही नीच व घृणित समझा जाता है। वास्तव में यदि वाल्मीकि, भंगी या मेहतर इस तरह का काम करना बंद कर दें तो देश से छुआछूत बहुत हद तक कम हो सकती है। सरकार को यह नियम बनाना चाहिए कि जो भी आदमी इस तरह का कार्य दूसरे आदमी से करवाएगा या जो आदमी इस तरह का कार्य करेगा, उसको तीन साल की सजा मिलेगी। तब भिष्टा ढोने की प्रथा तुरन्त बंद हो जाएगी।

मैं गाँव में हो रहे जादू की बात कर रहा था। जब कुर्मियों की गली से यह तमाशा बंद हो गया, उसी समय ब्राह्मणों का एक लड़का जादूगर के पास आया और उस जादूगर को ब्राह्मण गली में तमाशा दिखाने ले आया। वहाँ पर भी खूब तमाशा जमा। ब्राह्मणों की औरतें, लड़कियाँ यह तमाशा देखकर खूब खुश हुईं। उस समय गाँवों में मनोरंजन का कोई साधन सहजता से उपलब्ध नहीं था। तमाशा खत्म होने के बाद ब्राह्मणों ने जादूगर को अनाज और पैसा नहीं दिया। पैसा माँगने पर उरेरी मिश्र और हरिशंकर अवस्थी आँखें लाल-लाल करके बोले—"साले! तुम्हें गर्व होना चाहिए कि तुम लोग जमींदारों को तमाशा दिखा रहे हो। जब तक हम लोगों का आशीर्वाद तुम लोगों को नहीं मिलेगा, तुम्हारी कला अधूरी रहेगी।"

दलित जादूगर जोखिम भरे करतब दिखाने के बाद मन मसोस कर रह गया। करतब दिखाते समय यदि वह आहत हो जाता तो उसे अफसोस न होता लेकिन ब्राह्मणों के बेईमानी के करतब भरे खेल ने उसे बहुत आहत कर दिया था। वह जख्मी हो गया था। चाकुओं की धार तो बदन पर लगती है। लेकिन खेल खेलने के बाद मेहनताना माँगने पर ब्राह्मणों की तीखी नजरें और अपमान भरे शब्द उसके कलेजे में लग रहे थे। करतब दिखाते समय वह कभी घायल नहीं हुआ था। लेकिन ब्राह्मणों के व्यवहार ने उसे घायल कर दिया था। वह अपना करतब/जादू दिखाने का सामान बटोरकर चुपचाप अपने साथियों सहित मेरे घर के सामने आकर मेरे घर के चबूतरे पर आकर बैठ गए। दादा, अम्मा और मैं उनसे हमदर्दी दिखाने लगे। उनको तीन भेली गुड़ खाने को दिया और मैंने पानी पिलाया। गुड़ खाकर और पानी पीकर वे सभी बहुत राहत महसूस कर रहे थे। करतब दिखाते-दिखाते व बोलते-बोलते उनके गले सूख गए थे। उन लोगों ने कहा—

"ऐसे क्रूर ब्राह्मणों की गली में कभी भविष्य में तमाशा नहीं दिखाएँगे। मुफ्त का मनोरंजन करने वाले ब्राह्मणों का नाश हो।"

दो ब्राह्मण खूबसूरत लड़कियों के दो रात गायब रहने का रहस्य

आज तक गाँव वाले यह नहीं जान पाए कि ब्राह्मणों की दो युवा खूबसूरत लड़कियाँ गाँव से दो दिन के लिए गायब थीं, वे कहाँ रहीं? दोनों लड़कियाँ प्रतिदिन हाथों में पानी से भरे लोटे लेकर दिशा-मैदान करने गाँव से लगभग एक किलोमीटर दूर सुबह-शाम जाया करती थीं। गाँव के अक्सर सभी स्त्री, पुरुष, बच्चे दिशा-मैदान करने गाँव से बाहर खेतों में जाया करते हैं। गाँव में यह सभी की प्रतिदिन की दिनचर्या है। एक शाम को दोनों लड़कियाँ दिशा-मैदान करने गई थीं, तो रात को घर वापस नहीं आईं। गाँव के ब्राह्मणों में हड़कंप मच गया। सभी ब्राह्मण उनको ढूँढने लगे। आस-पास के गाँवों की ओर दौड़ पड़े। इस बात को इतना गोपनीय रखा गया कि गाँव वालों को इस बात का पता न चले। लेकिन ऐसी बातें छिपाने से छिपती नहीं हैं। तुरन्त पूरे गाँव में ब्राह्मणों की लड़कियों के गायब होने की खबर फैल गई।

दो दिन बाद उनको खोजकर गाँव लाया गया। ब्राह्मणों ने गाँव में यह प्रचारित कर दिया–'दोनों की मति भ्रम हो गई थी। दोनों को ऐसा लग रहा था कि गाँव और आगे है। वे दोनों लड़कियाँ अपने पीछे स्थित गाँव को भूल गई थीं। उनको ऐसा लग रहा था कि गाँव बहुत आगे है। वे आगे बढ़ती गईं। रात भर चलती रहीं। गाँव नसेनियां से 27 कि.मी. दूर जमुना नदी है। वहीं जाकर रुकीं। हम लोगों ने उनको जमुना के घाट पर स्नान करते पाया।'

जिनकी लड़कियाँ गायब हुई थी उन परिवारों ने लोगों को बताया कि 'जमुना मइया ने दोनों को स्नान करने के लिए बुला लिया।'

उस ब्राह्मण की बुद्धि की दाद देनी होगी। इतनी बड़ी घटना को धर्म से जोड़ दिया। अपनी बदनामी को धर्म की आड़ लेकर बचा लिया। धर्म या भगवान के खिलाफ किसी की हिम्मत नहीं होती है कि वह बोले।

हकीकत यह थी कि ब्राह्मण अपनी औरतों और लड़कियों को घर में बन्द करके रखते थे। कभी भी अपने रिश्तेदारों की शादियों में नहीं जाने देते थे। मैंने कभी भी गाँव के मेलों में उनके घर की स्त्रियों और लड़कियों को जाते नहीं देखा। बहुत कम उनके परिवारों की स्त्रियां बाहर निकलती थीं। वास्तव में ब्राह्मणों के घर उनके लिए कैद या यातनागृह बन जाते थे। विशेषकर उन कट्टर ब्राह्मणों के परिवारों के लिए जहाँ पर स्त्रियों को बाहर निकलने की बिल्कुल आजादी नहीं थी।

कहते हैं कि चिड़िया को पिंजरे में बंद करके रखा जाता है। उसको पिंजरे के अन्दर, पानी पिलाया जाता है, खाना खिलाया जाता है। लेकिन मौका लगते ही वह पिंजड़े से बाहर निकल कर आसमान में उड़ जाती है। वहाँ उसे खुली हवा मिलती है। पिंजड़े के अन्दर कैद रहने पर उसे खाना तो मिलता है लेकिन शरीर की भूख नहीं मिटती है। यह वैज्ञानिक सत्य भी है कि खाना खाने के साथ-साथ शरीर की बाइलॉजिकल नीड की पूर्ति होना बहुत जरूरी है।

ब्राह्मणों की लड़कियों को घर से भागने का मुख्य कारण यही था कि वे जवान हो गई थीं। घरवाले उनकी शादी-ब्याह की ओर कोई ध्यान नहीं दे रहे थे। गाँव से एक या दो कि.मी. दूर दिशा-मैदान के लिए जाना उन्हें बहुत राहत पहुँचाता था। दो-दो, तीन-तीन घंटे गाँवों से दूर खेतों में बैठी रहती थीं। वहाँ कुर्मियों और अरखों के खेत थे। वहीं दोनों युवा खूबसूरत लड़कियाँ प्रतिदिन जाती थीं। गाँव में मैंने खुसर-फुसर करते सुना कि कुर्मियों और अरखों के नौजवान लड़कों से उनका प्रेम हो गया था। उनके प्रेम में इतना पागल हो गई थीं कि वे दोनों दो रात तक घर नहीं आईं।

एक दूसरी बात गाँव में यह भी फैली थी कि वे दोनों लड़कियाँ युवा खूबसूरत दलित जादूगरों पर मोहित हो गई थीं। लड़कियों ने उन दोनों जादूगरों को प्रेम पत्र पहुँचाया था। उनसे मिलने का स्थान सुनिश्चित किया था। दो दिन बाद ब्राह्मणों ने अपनी अपनी दोनों लड़कियों को कहीं से खोज लाए। एक माह के अन्दर खूब दहेज देकर दोनों की शादी दूर गाँवों के ब्राह्मण लड़कों से कर दी गई।

गाँव का राष्ट्रभक्त तिवारी व खटिक परिवार

मुझे याद है, 15 अगस्त व 26 जनवरी को स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री सियाराम तिवारी व मेरे चाचा किरहना खटिक गाँव में गाँव के लड़के-लड़कियों को लेकर प्रभात फेरी करवाते थे। गाँव भर के चक्कर लगाते थे। राष्ट्रीय कवि व पद्मश्री सोहनलाल द्विवेदी की स्वतंत्रता संग्राम के समय लिखी गई कविता की पंक्तियाँ गाया करते थे। इस कविता ने देश की आजादी दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी–

"विजयी विश्व-तिरंगा प्यारा
झण्डा ऊँचा रहे हमारा
इसकी शान न जाने पाये
चाहे जान भले ही जाए
तब होए प्रणपूर्ण हमारा
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।"

इन पंक्तियों को सुन कर मेरी रगों में तेजी से खून दौड़ने लगता था। जब मेरे घर के सामने गाँव के लोग यह गीत गाते हुए आते थे तब मैं भी उसमें शामिल हो जाता था। मुझसे तिवारी व चाचा किरहना खटिक-टोली को रोक कर नारे लगवाया करते थे। मैं टोली के आगे नारा लगाता था–

"भारत माता की"

टोली बोलती थी–

"जय"

मैं तीन बार नारे लगवाता था। फिर मैं कहता था–

"महात्मा गाँधी"

"अमर रहें"

"पं. जवाहर लाल नेहरू"

"अमर रहें"

मैंने आगे ये सभी नारे लगाने के बाद एक नारा लगवाया–

"डॉ. अम्बेडकर"

"अमर रहें"

"डॉ. अम्बेडकर"

"अमर रहें"

"डॉ. अम्बेडकर"

"अमर रहें"

उसी समय शिवभजन अवस्थी, हरिशंकर अवस्थी, उरेरी मिश्र आ गए। उन्होंने डॉ. अम्बेडकर का नारा लगवाने से रोका। मैं नहीं रुका। अम्बेडकर का नारा लगाते हुए टोली आगे बढ़ गई। तिवारी जी ने मुझे समझाया–

"हाथी चला जाता है। कुत्ते भौंकते रहते हैं।"

मेरे चाचा का नाम किशना था लेकिन ब्राह्मणों ने मेरे चाचा का नाम सरकारी रिकार्ड में 'किरहना' लिखवा दिया था। वे दलितों के नाम मतइया, भदइया, फग्गू, फगुनी, चैतुआ, बसंता, फैलुआ, मिक्खू, हग्गू आदि लिखवाते थे। ब्राह्मण मास्टर भी दलित लड़कों के नाम खराब-खराब लिखा करते थे। मेरे बाबा स्व. दुर्गा प्रसाद ने मेरा नाम एक दलित अध्यापक से रूपनारायण लिखवाया था। बाबा कहा करते थे कि यह मेरा राशि का नाम है। ब्राह्मणों के एक परिवार के मुखिया का नाम पं. रूपनारायण अवस्थी था। जब उनको पता चला कि मेरा नाम प्राइमरी पाठशाला में 'रूपनारायण' लिखवाया गया है तो ब्राह्मणों ने मेरे बाबा और दादा को बुलाया और मेरा नाम रूपनारायण कटवाने को कहा और मेरा नाम 'हिरवा' रखने को कहा। मेरे घर वाले मुझे हीरालाल तो कहने लगे लेकिन मेरे बाबा व दादा ने मेरा नाम सरकारी रिकार्ड से नहीं बदलवाया। रूपनारायण ही रखा।

ब्राह्मणों ने बहुत धमकाया हम लोगों को लेकिन मेरा नाम रूपनारायण जारी रहा।

राष्ट्रभक्त सियाराम तिवारी के एक आँख थी। शायद अंग्रेजों से टक्कर लेते समय उनको एक आँख गँवानी पड़ी थी। शायद अंग्रेजों ने उनकी एक आँख निकाल ली थी। यह बात मैं दावे के साथ नहीं कह सकता हूँ स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की उनको पेंशन मिलती थी। गरीब परिवार था। लेकिन स्वाभिमानी था। कुरीतियों के खिलाफ संघर्ष करने को तैयार रहता था। अत्याचारी ब्राह्मणों से वे सदैव रुष्ट रहते थे। अत्याचारी ब्राह्मण जब दलितों पर बहुत जुल्म करते थे तो मेरे चाचा किरहना खटिक के साथ वह ब्राह्मणों को समझाने आ जाते थे। ब्राह्मण उनकी बातें नहीं मानते थे। उनको भी गाली देने लगते थे। 'किरहना खटिक' के साथ ब्राह्मणों से यह कहते चले आते थे कि–

"आप लोगों के अत्याचारों की कहानी पुलिस को बताई जाएगी।"

"जा-जा काने तिवारी जो उखाड़ना हो उखाड़ लेना।"

ब्राह्मणों ने मेरे चाचा का नाम 'किरहना खटिक' क्यों सरकारी रिकार्ड में लिखवाया। इसमें भी एक खास बात है। मेरे चाचा को स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अंग्रेजों ने तिवारी के साथ बहुत मारा था। एक पैर ही तोड़ दिया था। शायद वह पैर पक गया था। उसमें कुछ कीड़े/जीवाणु पड़ गए थे। तभी से गली के ब्राह्मण मेरे चाचा को 'किरहना' कहने लगे थे। किरहना नाम सुनकर वे भी ब्राह्मणों पर पलटवार करते थे–

"ब्राह्मणों तुम्हारे मुँह में कीड़े पड़ेंगे। मेरे तो पैर में ही पड़े हैं।"

ब्राह्मण हरिशंकर अवस्थी व अन्य ब्राह्मण उनको गाली देने लगते थे। चाचा मुँह के अन्दर बुदबुदाते हुए व ब्राह्मणों को भी गाली देते हुए अपने घर आ जाते थे। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी मेरे चाचा 'किरहना' को ब्राह्मण घेर कर मारने लगते थे। एक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी का अपमान वास्तव में पूरे राष्ट्र का अपमान होता है। लगता है मेरे गाँव के तथाकथित जमींदार ब्राह्मण अंग्रेजों के पिट्ठू थे। देशद्रोही थे।

ब्राह्मणों ने पिछड़ी जाति के इन्द्रजीत सिंह को खूँखार गुंडा बनाया

मेरे गाँव के ब्राह्मण मुन्नू मिश्र, शिवदत्त मिश्र, उरेरी मिश्र, हरिशंकर अवस्थी और शिवभजन अवस्थी ने कुर्मी जाति के इन्द्रजीत सिंह को गाँव का खूँखार गुण्डा बना दिया था। इन्द्रजीत को बलात्कारी बनाने में ब्राह्मणों का विशेष योगदान रहा। सदैव ब्राह्मणों के घरों में उनके साथ चौपाल लगाया करता था। गाँव की राजनीति ब्राह्मण अपनी चौपालों में किया करते थे और दलितों पर ब्राह्मण अत्याचार करने से पहले विचार-विमर्श किया करते थे। उस अत्याचार में कभी-कभी इन्द्रजीत सिंह को भी

शामिल कर लेते थे। दलितों से बेगार करवाना, रात-दिन काम करवाने के बाद उनको मजदूरी न देना। उनके साथ गाली-गलौच करना, फिर उनको मारना यही काम अत्याचारी ब्राह्मणों का था। ब्राह्मणों की छत्रछाया में रहते हुए इन्द्रजीत सिंह भी दलितों पर अत्याचार करने के तरीके सीख गया था। वह बहुत खूँखार हो गया था। उसने अपनी टोली में एक अरख अमरपाल को भी शामिल कर लिया था। वह भी बहुत अत्याचारी हो गया था। इन्द्रजीत सिंह के अत्याचारों को देखकर गाँव के अन्य लोग भयभीत रहते थे। वह हाथों में धारदार फरसा लेकर चलता था। ब्राह्मणों ने इन्द्रजीत सिंह व अमर पाल को चरित्रहीन बना दिया था। वह गाँव से बाहर अपने ट्यूबवैल में महफिलें लगाया करता था। महफिलों में शराब का सेवन खूब होता था। कुछ कमजोर दलितों, पिछड़ों की बहू-बेटियों को अपने ट्यूबवैल में रात्रि में बुलाया करता था। डर की वजह से लोग अपनी बहू-बेटियों को रात्रि में भेज देते थे। वह बाहर के गाँवों के गुंडों को भी दूसरों की बहिन-माताओं की इज्जत लूटने में शामिल करता था। मुझे इस बात का बाद में पता चला। वह फरसा लिए गाँव की गलियों से गुजरता था। एक बार मैं एक दलित के घर के सामने एक दोस्त से बात कर रहा था। गुंडा इन्द्रजीत सिंह वहाँ से गुजरा। एक खूबसूरत दलित की लड़की घर के अन्दर थी। उसकी माँ बाहर बैठी थी। गुण्डा उसकी माँ से बोला—"आज रात को ट्यूबवैल में अपनी लड़की को भेज देना।"

मैं समझ नहीं पाया। मैंने लड़की की माँ से पूछा। उसने रोते हुए सारी बातें बताईं—"यह इन्द्रजीत सिंह हफ्ते-पन्द्रह दिन में रोज बिटिया को ट्यूबवैल में रात भर रखता है, सुबह तड़के घर भेजता है। मना करने पर जान से मार डालने की धमकी देता है।"

मैं दंग रह गया कि हमारे गाँव में ऐसा भी होता है। कुछ ब्राह्मण भी उसके इस कुकृत्य में शामिल होते हैं। दलित महिला ने मुझे बताया—"अगर मैं नहीं भेजती हूँ तो रात में घर में घुस कर सभी के सामने तमंचे की नोंक पर बिटिया को घसीटकर ट्यूबवैल ले जाता है। हम सभी पर लातों-घूसों से प्रहार करता है। कभी-कभी हम लोगों को बाहर करके मकान के अन्दर ही उसके साथ बलात्कार करता है।"

मैंने लड़की के भाई को समझाया और कहा कि अपनी इज्जत के लिए लड़ना सीखो। इसका प्रतिकार करो, वरना तो ऐसे गुण्डे हमेशा ही हमारे परिवार की इज्जत पर डाका डालते रहेंगे।

लड़की का भाई कोई तरकीब सोचने लगा। उसने मेरे कहने से चमार टोला के चमार भाइयों और पास के गाँव के पासियों से सम्पर्क किया। गुंडे ने एक दिन फिर लड़की को ट्यूबवैल में बुलाया। लड़की के भाई ने अपनी माँ को समझा

दिया था कि तुम उससे ट्यूबवैल की चाभी ले लेना और कहना कि बिटिया वहाँ रात में पहुँच जाएगी। उस दलित महिला ने वैसा ही किया। करीब रात के दस बजे गुंडा शराब के नशे में ट्यूबवैल आया। लड़की के भाई के साथ कई खूँखार दलित वहाँ पहले से ही मौजूद थे। ट्यूबवैल में अंधेरा था। उसको अंधेरे में दलितों ने ट्यूबवैल के कमरे की फर्श पर पटक दिया। गुण्डा चिल्ला रहा था—"कौन हो, छोड़ो मुझे।"

एक पासी लड़का बोला—"साले, दलितों की लड़कियों को ट्यूबवैल के अन्दर बुलाता है।"

"मुझे छोड़ो—मैं तुम सबको जान से मार दूँगा।"

दो लड़कों ने उसके दोनों हाथ पकड़ लिए। दो लड़कों ने उसके दोनों पैर पकड़ लिए। उसके हाथ-पैर ट्यूबवैल के सहारे रस्सी से बाँध दिए। लड़की के भाई ने टार्च की रोशनी में सारा काम किया। वह उसे पहचान नहीं पाया। एक मुगरी से उसके अंडकोशों पर खूब प्रहार किए गए। वह खूब चिल्ला रहा था। रो रहा था। लड़की के भाई ने कहा—"साले! अगर आगे किसी दलित औरत, लड़की को अपनी हवस का शिकार बनाया तो तेरी इसी तरह धुनाई करेंगे।"

वह छह माह तक इलाज करवाता रहा। लेकिन इलाज करवाने के बाद ठीक हो जाने पर उसका मन फिर चंचल हो उठा। अब वह दलित लड़कियों और औरतों को छोड़कर तेलियों की युवा औरतों और लड़कियों की ओर बुरी नजर से देखने लगा था। इस घटना के बाद उसने और कई लड़कों को अपनी टोली में शामिल कर लिया था। वह अब इस तरह की हरकतें ट्यूबवैल के पास बने कमरे में नहीं करता था। जबरन दलितों के घर में घुस कर रात्रि के समय उनकी औरतों के साथ बलात्कार करता था। घर के तेली लोग अपने मान-सम्मान, इज्जत के लिए चुपचाप इस तरह के जुल्म सहन कर लेते थे। गाँव में कहीं इस बात का पता न चले, अपने मुँह सिल लेते थे। गाँव में इस तरह की बातें जंगल में लगी आग की तरह फैलती हैं। अगर गाँव वालों को इस बात का पता चल गया तो वे गाँव वालों के सामने मुँह दिखाने लायक नहीं रहेंगे। उनकी लड़कियों की शादी होना मुश्किल होगी।

ये देहाती अपराधी शहरी अपराधियों से कई गुना शक्तिशाली होते हैं। इनके अपराध करने के तरीके शहरी अपराधियों के तरीकों से बिल्कुल भिन्न होते हैं। ये राहजनी भी कर लेते हैं। ये पैसे लेकर सरे आम निर्दोष आदमियों का कत्ल भी कर देते हैं। चूँकि देहातों में पुलिस की कोई व्यवस्था नहीं होती है इसलिए ये अपराध करके सफलतापूर्वक भागने में सफल हो जाते हैं। शहरों में दिन-दहाड़े अपराध करना जोखिम भरा होता है। पुलिस द्वारा पकड़े जाने का डर रहता है। अपराधी शहरों की अपेक्षा देहातों में दलितों, पिछड़ों पर ज्यादा जुल्म बरपाते हैं।

देहातों में शहरों की अपेक्षा लुकने-छिपने के ज्यादा अवसर रहते हैं। देहाती गुंडों को पकड़ना बड़ा मुश्किल होता है। इसलिए देहातों में अपराध शहरों की अपेक्षा ज्यादा होने लगे हैं। ज्यादातर दलित, उत्पीड़न की कोई भी रिपोर्ट थानों में दर्ज नहीं करवाते हैं, यदि गुण्डों के विरुद्ध बात थाने तक जाती है तो दलित जिन्दा नहीं रहते हैं। यही डर पिछड़ों और दलितों को भयभीत किए रहता है। सब कुछ जानते हुए भी चुपचाप अपनी माँ-बहिनों की इज्जत लुटते देखते रहते हैं।

नौटंकी के वक्त बलात्कार और गुंडे लखनासिंह की मौत

गाँवों में गुंडों के बढ़ते अत्याचारों से सम्बन्धित एक और प्रकरण मैं आपको बताता हूँ। कल्लू तेली के लड़के की शादी हो गई थी। कल्लू तेली अपनी बहू को विदा करा के गाँव ले आया था। दूसरे दिन नौटंकी का आयोजन किया गया था। नवविवाहित पति-पत्नी खूब हँसी-मजाक कर रहे थे। एक शामियाना तानकर उसके नीचे लकड़ी के तख्त डाले गए थे, जिनके ऊपर नौटंकी चल रही थी। नीचे दरियाँ बिछाई गई थीं। गाँव के लोग नीचे जमीन पर बैठकर नौटंकी का मजा ले रहे थे। जब कभी गाँवों में इस तरह नौटंकी होती है, नौटंकी ग्रामीणों के लिए मनोरंजन का बहुत बड़ा साधन बन जाती है। बच्चे से लेकर बूढ़े तक सभी इस नौटंकी का आनन्द लेते हैं। मैंने बूढ़े आदमियों और औरतों को एकटक लड़कियों का नाच निहारते देखा है। शायद ये बूढ़े और जवान अपने बचपन के दिनों की याद में डूब जाते हैं। मैंने यह भी देखा कि गाँव के प्रभावशाली लोग उन लड़की कलाकारों से मिलने के लिए लालायित रहते हैं। नक्कारों की आवाज गाँव के बाहर दूर तक वातावरण को चीरते हुए पहुँच जाती है। आज के आधुनिक वाद्ययंत्रों के संगीत में वह खिंचाव नहीं है। जो नक्कारों के कर्कश संगीत में है। चौगाला नौटंकी का एक प्रसिद्ध गाना होता है। जो खेल शुरू होने के पहले कलाकार गाते हैं। शायद यह चौगाला दर्शकों को नौटंकीमय करने में बहुत मदद करता है। सारे दर्शक चौगाला और लड़कियों के आधुनिक गानों से मस्त हो गए थे। कुछ मनचले गाँव वाले लड़कियों को 5-5 या 10-10 रुपये के नोट दिखाते थे। लड़कियाँ बीच में आगे बैठे लोगों के हाथों से रुपये ले आती थीं। शायद लड़कियों को अपने पास बुलाने का वह एक बहाना था। कभी-कभी वे नोट मुँह में दबा लेते थे। लड़कियाँ घूँघट निकालकर रुपये देने वाले के सर पर साड़ी डालकर ढंक लेती थीं और उसके मुँह में दबे रुपयों को अपने मुँह में पकड़ लेती थीं। ऐसा केवल दबंग ही करते थे। मजाल कोई दलित ऐसी हरकत कर दे। हालांकि दलितों को ऐसी हरकत करना नहीं चाहिए क्योंकि यह उनकी मर्यादा के खिलाफ है क्योंकि यह एक घिनौनी बात लगती है। इतने दर्शकों के बीच घूँघट के अन्दर कोई जलील हरकत करना

दलित सभ्यता में नहीं है। मैंने यह देखा कि देहातों में बहुत ज्यादा भेदभाव, ऊँच-नीच की भावना रहती है। वहीं सवर्ण जो समाज को इस तरह बाँटते हैं, वहीं डांस करने वाली लड़की को घूंघट के अन्दर चूमने से कोई संकोच नहीं करते हैं। डांस करने वाली लड़की दलित या गैर-दलित हो। वहाँ पर यह भेद हो सकता है डांस करने वाली लड़की दलित या गैर-दलित हो। वहाँ पर यह भेद मिट जाता है।

आज सिनेमा और टीवी के युग में भी देहातों में नौटंकी बेसब्री और तल्लीनता से देखी जाती है। जैसे नौटंकी आजादी के पहले देखी जाती थी। प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक युग में लोककलाओं का जीवित रहना इस बात का संकेत देता है कि लोक-कलाएँ और लोक-कथाएँ अपनी जीवंतता के लिए जनमानस में अपनी जबरदस्त पैठ बनाए हुए हैं। चाहे खेल लैला-मजनूं, सीरीं-फरहाद या सुल्ताना डाकू का हो। दर्शक उन पात्रों को अपने में खोजने लगते हैं।

खैर फिर अपने घटनाक्रम पर आते हैं। गाँव में नौटंकी चल रही थी। सुल्ताना डाकू का खेल जारी था। नक्कारों की आवाज दूर-दूर तक के गाँवों के आदमियों को अपनी ओर खींच रही थी। रात्रि के करीब बारह बज रहे थे। गर्मी के दिन थे। शहरों की कमसिन लड़कियाँ फिल्मी हीरोइनों की अंदाज एवं उनके लटकों-झटकों के साथ फिल्मी गाने गा रही थीं। ग्रामीण दर्शक गानों एवं नाच का खूब लुत्फ उठा रहे थे। एक बड़े शामियाने के नीचे बड़े-बड़े लकड़ी के तख्त डालकर नौटंकी का मंच बनाया गया था। जमीन पर दरियाँ बिछाई गई थीं। दर्शक इनके ऊपर बैठकर नौटंकी का आनन्द ले रहे थे।

कल्लू तेली गाँव का एक दुकानदार था। खाता-पीता परिवार था। एक साल पहले उसने अपनी बड़ी लड़की की शादी एक सैनिक अनोखेलाल से की थी। वह बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स का एक बहादुर सिपाही था। वह छुट्टी लेकर अपने साले जगदम्बा की शादी में पत्नी समेत आया था। वह अपनी पत्नी के साथ नौटंकी देख रहा था।

दूल्हा जगदम्बा अपनी नई नवेली पत्नी के साथ कमरे के अन्दर हँसी-मजाक कर रहा था तथा पत्नी को नौटंकी देखने के लिए मना रहा था।

"चलो नौटंकी देख लो सुल्ताना डाकू का खेल खेला जा रहा है।"

पत्नी दुलारी बोली, "आप देख आइए। मैं गाँव वालों के सामने कैसे जाऊँ गाँव वाले कहेंगे कि अभी से लोक-लाज त्याग कर अपने आदमी के साथ बेहयापन दिखा रही है।"

"समय बदल रहा है। गाँव से दकियानूसी बातें खतम हो रही हैं। गाँव के आदमी और औरत शहरों की तरह रहना सीख रहे हैं। ज्यों-ज्यों गाँवों में शिक्षा का प्रसार होता जा रहा है, देहातों के बच्चे शहरों में जाकर नौकरी पेशा कर रहे हैं, देहातों में शहरी रहन-सहन, देहाती रहन-सहन पर हावी होता जा रहा है। गाँव

की परम्परावादी एवं पुरातन परम्पराएँ दम तोड़ रही हैं। गाँवों की अंध-धार्मिकता, सामाजिक विषमता एवं विकृतियाँ गाँवों से पलायन करती जा रही हैं। गाँव आधुनिक शहरों का हिस्सा बनते जा रहे हैं। देहातों से सड़ी-गली कुरीतियाँ उस दिन बिल्कुल दूर हो जाएँगी जिस दिन पुरानी पीढ़ी का समय समाप्त हो जाएगा।''

दुलारी ने अपने पति को कहा–''शादी में रात भर जागने की वजह से मेरा सिर दर्द कर रहा है। आप जाइए और नौटंकी की सुन्दर-सुन्दर अप्सराओं से मिल आइए....''

''तुमसे ज्यादा सुन्दर अप्सरा कौन होगी? विश्व की कोई भी सुन्दरी मेरी इस ग्रामीण सुन्दरी से मुकाबला नहीं कर सकती है।''

''सच कह रहे हो!''

''तुम्हारी बाहर की सुन्दरता तो मैंने देख ली है। सुहागरात में मैं तुम्हारी आन्तरिक सुन्दरता में खो जाऊँगा। खजुराहो की मूर्तियों में जो आध्यात्मिक सुन्दरता है, मैं पा जाऊँगा।''

''इस गाँव की लड़की में आपने क्या देखा?''

''बहुत कुछ। यह तुम्हारा कसा हुआ गोरा बदन, साढ़े पाँच फुट की हाइट, बड़ी-बड़ी आँखें मुझे तुम्हारा दीवाना बना दिया है। शहर की लड़कियों में इतनी अच्छी शारीरिक कसावट नहीं होती है, जितनी कि देहात की लड़कियों में। इसका सटीक कारण यह है कि देहात की लड़कियाँ बचपन से ही खेतों एवं घरों में शारीरिक श्रम करती हैं। जबकि अधिकतर शहर की लड़कियाँ अपना फिगर बिगड़ने के डर से घर का कार्य करने में मुँह चुराती हैं।''

''आपको स्त्रियों और लड़कियों की सुन्दरता के बारे में बहुत ज्ञान है। लगता है आपने महिलाओं पर रिसर्च किया है।''

''देहात की महिलाएँ प्राकृतिक रूप से सुन्दर होती हैं। यदि उनको ब्यूटी पॉर्लर का सहारा मिल जाए तो अति सुन्दर हो जाएँगी। शहर की औरतें ब्यूटी पॉर्लर का सहारा लेकर सुन्दर बनती है। प्राकृतिक रूप से अति सुन्दर नहीं होती हैं। मिट्टी के चूल्हे में लकड़ियों की आग में बनाई गई, आटे की रोटी, गैस की लौ में पकाई गई रोटी की अपेक्षा ज्यादा स्वादिष्ट होती है। घर की चक्की में पिसा आटा मशीन द्वारा फैक्ट्रियों में पिसे आटे की बनिस्पत ज्यादा शुद्ध होता है।''

''इतनी तारीफ मेरी मत करो, नहीं तो मैं अपने सिरदर्द को भूल जाऊँगी।''

''मैं इतना स्वार्थी नहीं हूँ कि तुम्हारी ऐसी हालत में मैं तुम्हारे सिरदर्द का भी ख्याल न रखूँ।''

''आप नौटंकी देख कर आइए तब तक मेरा सिर दर्द दूर हो जाएगा। तब तक मैं तुम्हारा इंतजार करती हूँ।''

जगदम्बा घर के पिछवाड़े चल रही नौटंकी देखने चला गया। दुलारी दरवाजे को अन्दर से कुंडी लगाकर सेज पर लेटकर आराम करने लगी।

इसी गाँव का एक गुंडा लखना सिंह अपनी हैवानियत के लिए आस-पास के गाँवों में चर्चित हो गया था। गाँव के छः आवारा नौजवानों की टोली बना ली थी। अपने-अपने हाथों में हरदम देशी कट्टा, चाकू, करौली, फरसा और भाला रखते थे। इन औजारों को लेकर खुले आम गाँव में घूमते थे। इनको देखकर गाँव के छोटे आदमी से लेकर बड़े बुजुर्ग तक इनको दुआ-सलाम करते थे। लखना सिंह गिरोह इसमें अपना गर्व और गौरव समझता था।

जब लोग किसी को भय व डरवश ऊपरी मन से आदर व सत्कार देते हैं तो वह वास्तव में सही मायने में आदर व सत्कार नहीं होता है। लोगों की उसमें उनकी मजबूरी व इज्जत-आबरू बचाने की कहानी छिपी होती है। ऐसी कहानी जिसका अंत उस जालिम की हार से होता है। कुछ समय तक वह कहानी का मुख्य पात्र हो सकता है, लेकिन वह अंत में खलनायक निकलता है।

लखना सिंह के पास खूब जमीन-जायदाद थी। उसका बड़ा भाई शंकर सिंह खूबसूरत होने के साथ-साथ एक नेक इंसान था। लखना सिंह ज्यादा खूबसूरत नहीं था। लेकिन इसकी पत्नी अति सुन्दर थी। लेकिन वह अपनी पत्नी को छोड़कर गाँव की औरतों और लड़कियों पर बुरी नजर रखता था। जबरदस्ती उनको अपनी हवस का शिकार बना लेता था। गाँव के गरीब दलितों व गैर-दलितों की लड़कियों व बहुओं की जबरदस्ती उनके घर में घुस कर उनके सामने अपने गुंडों और औजारों के बल पर इज्जत लूट लेता था।

जगदम्बा के चले जाने के बाद लखना सिंह अपने साथियों के साथ उसके घर आ गया। उसने दरवाजे की कुंडी खटखटाई। जगदम्बा की नवविवाहिता पत्नी ने समझा उसका पति वापस आया है। उसने दरवाजा खोल दिया। लखना सिंह दरवाजे के अन्दर प्रवेश कर गया और अन्दर से दरवाजे की कुंडी लगा ली। दुलारी को पकड़ कर उसको चूमने-चाटने लगा। दुलारी जोर-जोर से उसको झटका देकर चिल्लाने लगी–

''बचाओ! बचाओ! बचाओ!''

''तुझे कोई नहीं बचाएगा। मैं इस गाँव का राजा हूँ। मैं यहाँ का शहंशाह हूँ। मेरा जिस औरत पर मन आ गया मैं उसको भोग कर छोड़ता हूँ।''

दुलारी काँपने लगी और बोली–''अभी हमारी सुहागरात नहीं हुई है, हमें छोड़ दीजिए।'' गुंडा बोला।

''सुहागरात हम तुम्हारे साथ मना लेते हैं।''

''ऐसा पाप मत करिए।''

''सुहागरात में पाप कहाँ होता है? सुहागरात में पुण्य ही पुण्य होता है।''

"मुझे अपवित्र मत कीजिए।"

"सुहागरात में औरत पवित्र हो जाती है। इससे क्या फर्क पड़ता है कि सुहागरात में मनाऊँ या जगदम्बा तुम्हारे साथ मनाए।"

दुलारी की जोर-जोर से चिल्लाने की आवाज जोर-जोर से बज रहे नक्कारों की आवाज में दब रही थी। नक्कारों पर जितनी जोर-जोर से डंडा पड़ता था नक्कारे से उतनी ही जोर से आवाज निकलती थी। डंडे के जोर के प्रहार से नक्कारा फट कर तख्त से लुढ़क कर जमीन पर गिर पड़ा।

दुलारी की आवाज अब नौटंकी देख रहे उसके पति व उसके सैनिक जीजा तक सुनाई देने लगी। सब लोग दौड़कर दरवाजे पर आ गए। बाहर खड़े बाकी बदमाशों को मार-मारकर अधमरा कर दिया। सारे गुंडे वहाँ से भाग गए। माजरा भाँपकर व दुलारी के चिल्लाने की आवाज सुनकर वे दोनों बाहर से दरवाजा पीटने लगे।

दुलारी अन्दर से चीख रही थी, "मुझे बचाओ इस गुंडे ने मेरी इज्जत लूट ली।"

"घबराओ नहीं बहिना हमने इसके सारे गुंडों को अधमरा कर दिया है, सारे गुंडे भाग गए हैं।" फौजी ने जोर-से कहा।

गुंडा लखनासिंह यह बात सुनकर डर गए और जोर-जोर से बोला—"मुझे जाने दो। मैं किसी का कत्ल किए बगैर चला जाऊँगा। गाँव का कोई भी आदमी मेरे कामों का विरोध नहीं करता।"

"तू अब यहाँ से जिन्दा नहीं जा पाएगा। मैंने तेरे सभी आदमियों को मार कर भगा दिया है।"

सभी लोग दरवाजा तोड़ने लगे, लेकिन दरवाजा तोड़ने पर लखना सिंह तमंचे से वार कर सकता था और किसी की जान जा सकती थी। नौटंकी देखने आए गाँव वालों ने दरवाजे के सामने इकट्ठा होकर विचार-विमर्श किया और अन्त में फौजी ने यह निर्णय लिया कि कमरे की मिट्टी की छत को फावड़े से खोदकर गुंडे को मारा जाए।

यह बात सुनकर लखना सिंह थरथराने लगा। दुलारी के पीछे छिपकर अपनी जान की दुहाई देने लगा—"अगर तुम मुझे मारोगे तो मैं इस औरत को मार डालूँगा।"

फौजी बोला, "तू साले! कुछ नहीं कर पाएगा, अब तू मरेगा।"

गैस की रोशनी में छत खोदी गई। छत में बड़ा गड्ढा हो गया। गुंडा स्पष्ट दिखाई देने लगा। उसने अन्दर से ऊपर की ओर कई फायर किए लेकिन फौजी अपने को बचाता रहा।

लखना सिंह जोर-जोर से चिल्ला रहा था, "गाँव वालो मुझे छोड़ दो, मैं दोबारा ऐसी गलती नहीं करूँगा।"

वह जोर-जोर से अपने साथियों को चिल्ला-चिल्ला कर बुलाने लगा—"नन्दा सिंह मुझे बचाओ! चम्पा सिंह गाँव वालों से मेरी जान बचाओ!"

उसका भाई शंकर सिंह भी वहाँ मौजूद था। लखना सिंह जोर-जोर से अपने भाई को बुलाने लगा—

"भइया शंकर सिंह मुझे बचा लो, मैं अपनी आधी जायदाद तुम्हारे नाम लिख दूँगा।"

उसने कहा, "अब तुम्हें कोई नहीं बचा सकता। अगर मैं तुम्हें बचाऊँगा तो मैं स्वयं मारा जाऊँगा। मैंने तुम्हें कई बार समझाया था, अब तुम अपने गुनाहों की सजा भुगतो।"

"ऐसा मत कहो भइया—तुम चाहो तो गाँव वालों को मना कर सकते हो, मैं अपनी जान की भीख माँगता हूँ।"

"अपनी जान की भीख माँगनी है तो दुलारी के पति जगदम्बा और उसके फौजी भाई से माँगो।" गुंडा गिड़गिड़ाते हुए आवाज में बोला "मैं हाथ जोड़कर जगदम्बा फौजी भइया से अपनी जान की भीख माँगता हूँ मुझे क्षमा कर दो।"

फौजी बोला, "साले तू अपनी लाठी के बल पर गाँव की औरतों की इज्जत-आबरू लूटता है। अब तेरे कुकर्मों का फल तुझे मिलेगा। गाँव की बहुओं के साथ पहले तू सुहागरात बनाता है। तुझे मार कर गाँव वालों को और इस गाँव की औरतों को तेरे कुकृत्यों से मुक्ति दिलाऊँगा।"

फौजी ने आगे कहा, "हम फौजी इस देश की सीमाओं की रक्षा करते हैं। इस देश को आतंकवादियों और दुश्मनों से बचाते हैं। बाहर के दुश्मन तो दिखाई देते हैं, लेकिन तेरे जैसे अन्दर के दुश्मन भय के कारण दिखाई नहीं देते हैं। इस देश को बाहर के दुश्मनों से इतना खतरा नहीं है, जितना खतरा इसके अन्दर के दुश्मनों से है।"

"मुझे इस बार माफ कर दो। मैं फिर कभी ऐसी गलती नहीं करूँगा।"

गाँव वाले उसकी बात पर विश्वास कर ही रहे थे कि उसने दुलारी के पीछे से मुँह निकाल कर अपने तमंचे से छत की तरफ फौजी पर फायर कर दिया। फौजी वार बचा गया। फौजी ने कमरे की छत से जलती गैस हटा दी। गुंडे ने कमरे की लालटेन की बत्ती बुझा दी। फौजी दाएँ हाथ से रिवाल्वर ताने तथा बाएँ हाथ से टार्च पकड़े गुंडे पर रोशनी डालकर फायर करने की कोशिश करता रहा। फौजी ने दुलारी को बचाते हुए गुंडे लखनासिंह पर गन से निशाना लगाकर उसको ढेर कर दिया।

नौटंकी में सुल्ताना डाकू का खेल खेला जा रहा था। एक जीवित खूँखार व्यभिचारी सुल्ताना डाकू कमरे के अन्दर अपना खेल खेल रहा था। प्रत्येक खेल का अन्त होता है सुखदायी या दुःखदायी।

इस कुकर्मी सुल्ताना डाकू के अन्त के लिए इसके बड़े भाई शंकर सिंह ने भरपूर मदद की थी। गुंडे द्वारा अपने भाई से मदद माँगने पर उसने कहा था—"अब छोटे भाई तुम्हारा मरना ही ठीक है।"

यद्यपि इसके पीछे बहुत बड़ा राज था। बड़े भाई के सम्बन्ध छोटे भाई की पत्नी से बहुत दिनों से चल रहे थे, क्योंकि गुंडा अपनी पत्नी की ओर कोई ध्यान नहीं देता था। सालों साल उससे कोई सम्बन्ध नहीं रखता था। उसके सामने ही लड़कियों के साथ अमानवीय व्यवहार करता था। बलात्कार करता था। गुंडे के मरने से शंकर सिंह को एक खूबसूरत औरत और बहुत सारी धन-सम्पदा प्राप्त हो गई थी। यदि गुंडे की औरत और किसी से सम्बन्ध स्थापित कर लेती तो खूबसूरत औरत और सम्पदा से हाथ धोने के साथ-साथ बदनामी की भी चादर शंकर सिंह को ओढ़नी पड़ती।

शंकर सिंह की यह एक व्यावहारिक सोच थी। वास्तव में इस सोच में सामाजिक बंधन व नैतिक मूल्यों का हनन था—लेकिन आज के वैज्ञानिक एवं भौतिकवादी युग में नैतिकता का कोई स्थान नहीं है। यकीनन शंकर सिंह के इस कृत्य से सामाजिक मूल्यों का ह्रास था, लेकिन इससे औरतों की मान-मर्यादा, स्वतंत्रता सुरक्षित थी। एक गुंडे के जुल्मों, अत्याचारों और व्यभिचारों से मुक्ति मिली थी। भय मुक्त समाज का निर्माण सम्भव था।

त्रेता युग में श्रीराम ने बालि को इसलिए छल से मारा था क्योंकि उसने अपने छोटे भाई सुग्रीव की पत्नी से अवैध सम्बन्ध स्थापित कर लिया था। बालि को श्रीराम द्वारा मारने के पीछे नैतिकता को स्थापित करने का संदेश था। लेकिन इसमें श्रीराम का अपना स्वार्थ भी था। रावण को हराने के लिए वानरों की सहायता की आवश्यकता थी। उसमें केवल एक नारी सीता की मुक्ति का प्रश्न था। उस समय श्रीराम द्वारा बालि को मारना उचित ठहराया गया था।

कलयुग में बड़े भाई द्वारा छोटे भाई की पत्नी के साथ अवैध सम्बन्ध स्थापित करना एवं उसकी धन-सम्पदा को हड़पना जायज लगता है। क्योंकि वह गुण्डा पूरे समाज का दुश्मन था और स्त्रियों का शील भंग करने का दोषी था।

इस घटना के कुछ दिनों बाद मेरे गाँव के गुंडे इन्द्रजीत सिंह की कहानी का अंत भी लखना सिंह की तरह ही हो गया। उसके द्वारा गाँव की एक महिला के शील भंग करने की कोशिश करने पर उसके भाइयों द्वारा इंद्रजीत सिंह को मार डाला गया।

इन दोनों गुंडों के मरने से आसपास के सभी गाँवों की बहू-बेटियों ने राहत की सांस ली। बुरे का अंत बुरा ही होता है।

हफीज मियाँ

मैं आपको अपने गाँव के एक दिलचस्प आदमी हफीज मियाँ का किस्सा बताने जा रहा हूँ। हफीज मियाँ मेरे गाँव के धनाढ्य लोगों में एक था। काफी खेती थी। यह आदमी अपने घर का सारा काम स्वयं अपने हाथों से करने में विश्वास करता था। वह एक दूसरे गाँव में प्रधानाचार्य था। लोग इसको बहुत कंजूस कहते थे। सुबह तड़के जग कर खेतों का काम स्वयं निपटाता था, फिर साईकिल चलाकर दूसरे गाँव पढ़ाने जाता था, जो कि लगभग चौबीस कि.मी. दूर था। रोटियाँ अपने कुर्ते की जेब में भर लेता था। साईकिल चलाते हुए रोटियाँ खाते हुए चला जाता था। दाहिने हाथ से बाई-साईकिल का हैंडिल पकड़े और बाएँ हाथ से कुर्ते के अन्दर रखी रोटी को तोड़ता और मुँह में डालकर रोटी खाते हुए चला जाता था। गाँव वाले उसे अचम्भे से देखते थे, लेकिन वह किसी की परवाह नहीं करता था। वह समय का सदुपयोग कर लेता था। वास्तव में ऐसे आदमी काम-पूजा में विश्वास करते हैं। उसका घर गाँव के अन्दर था लेकिन उसकी तीन बीघा जमीन बिल्कुल गाँव के बाहर थी। उसने उसमें एक बड़ा तबेला बनाने की सोची, जिसमें वह खेतीबाड़ी का सारा सामान रख सके और अपने बैलों सहित गाय-भैंस उसमें बाँध सके। गेहूँ का भूसा उस बड़े तबेले में रख सके। वह इतना कंजूस था कि एक भी धेला कहीं भी खर्च नहीं करता था। उसने स्वयं गुम्मे पाथे। उनको मिट्टी में पकाया। दीवार बनाने के लिए अपने आप गारा बनाया। स्वयं कन्नी से उसने टेढ़ी-मेढ़ी दीवार बना दी। टेढ़ी-मेढ़ी दीवार दूर से ही लोगों को दिखाई पड़ती थी। लोग उसको देखकर खूब हँसते थे। लकड़ी की धन्नियों से उसको पाट दिया। उसका बड़ा तबेला बनकर तैयार हो गया। उसको इसकी परवाह नहीं थी कि लोग उसके तबेले को देखकर क्यों हँसते हैं? वह अपने स्वयं बनाए तबेले पर गर्व करता था।

एक वाकया और हफीज मियाँ के बारे में बताता हूँ। एक बार हफीज मियाँ को धुन सवार हो गई कि वह खेती करने के लिए ट्रैक्टर खरीदेगा। घाटमपुर कस्बा जो कानपुर देहात की तहसील है। वहाँ खेतीबाड़ी का सामान बिकता है। उसने स्वयं अकेले जाकर घाटमपुर कस्बे से एक बिल्कुल नया ट्रैक्टर खरीदा। मेरे गाँव नसेनियां से घाटमपुर लगभग पच्चीस कि.मी. दूर है। डीलर ने उसके गाँव तक ट्रैक्टर छोड़ने के लिए एक ड्राइवर को भेजा। हफीज मियाँ ड्राइवर के बिल्कुल पास बैठकर, ड्राइवर से ट्रैक्टर चलाने की ट्रेनिंग लेते रहे। ट्रैक्टर कैसे चलाया जाता है? कैसे रोका जाता है? कैसे मोड़ा जाता है? कैसे स्टार्ट किया जाता है? डीलर से यह बात तय हुई थी कि ड्राइवर को वह पन्द्रह रुपये देंगे। हफीज मियाँ ने सोचा ट्रैक्टर चलाना तो बहुत आसान है। पन्द्रह रुपये क्यों बेकार में दिए जाएँ?

करीब एक कि.मी. मुश्किल से ड्राईवर ट्रैक्टर ले गया होगा। हफीज मियाँ ड्राइवर से बोले–"तुम जाओ–मैं ट्रैक्टर स्वयं चला कर ले जाऊँगा।"

"आप ट्रैक्टर कैसे चलाकर ले जाएँगे? अभी तो आप पूरी तरह ट्रैक्टर चलाना सीखे भी नहीं हैं।"

"तुमने मुझे अभी सिखा तो दिया है। इसमें है ही क्या? मैं स्वयं ट्रैक्टर चलाकर घर ले जाऊँगा।"

"आप समझ लें–यह बहुत वाहन चलने वाली रोड़ है। मुगल रोड पर ट्रैक्टर अभी आपके लिए चलाना आसान नहीं है।"

हफीज मियाँ ने ड्राइवर का हाथ खींचकर ट्रैक्टर से नीचे उतार दिया। वह स्वयं ट्रैक्टर की ड्राइविंग सीट पर बैठ गया और ट्रैक्टर चलाने लगा। ट्रैक्टर आगे बढ़ने लगा। हफीज मियाँ ऐसा महसूस कर रहे थे जैसे वह आसमान में हवाई जहाज उड़ा रहे हों। युद्ध में स्टेनगन से गोले दाग रहे हों। जिस तेजी से ट्रैक्टर सड़क पर दौड़ता जा रहा था उसी तेजी से हफीज मियाँ का आत्मविश्वास छलांगें मार रहा था। वह सोच रहे थे कि गाँव पहुँचकर गाँव वालों को बताएँगे कि वह स्वयं ट्रैक्टर चला कर लाए हैं। लेकिन उनका आत्मबल, धोखा देने लगा। जब सामने से कोई वाहन आता था। वह भूल जाते थे कि ट्रैक्टर को किधर मोड़ें। यह बात बिल्कुल उसी तरह थी कि एक बैलगाड़ी चलाने वाले को ट्रक चलाने के लिए उसको स्टीयरिंग पकड़ा दी जाए। जब सामने से कोई वाहन आता था तो हफीज मियाँ खुदा-खुदा करने लगते थे। उनके हाथ-पैर काँप जाते थे। ट्रैक्टर को बन्द करना, चलाना, मोड़ना भूल जाते थे। पता नहीं एक-आध किलोमीटर कैसे आगे बढ़े? वह एक मेटाडोर से जाकर ट्रैक्टर सहित टकरा गए। ट्रैक्टर बहुत क्षतिग्रस्त हो गया। उनके हाथ-पैर टूट गए, करीब छह माह बिस्तर पर रहे।

कभी-कभी कंजूसी अभिशाप बन जाती है। मशीनरी चलाने की पूरी ट्रेनिंग लेने के बाद ही आदमी उस काम को करने के लिए फिट होता है। हफीज मियाँ ट्रैक्टर चलाना बाई-साईकिल चलाने के समान समझ रहे थे। फिर भी उनकी विल पॉवर की दाद देनी होगी। आदमी के अन्दर अगर विल पॉवर है तो वह आसमान में भी उड़ सकता है। हाँ, जरूरत इस बात की है कि यदि आदमी थोड़ा-सा इस वैज्ञानिक युग के वैज्ञानिक तरीकों का पालन करे तो ऐसा आदमी कुछ भी कर सकता है। समाज में ऐसे बहुत कम आदमी मिलेंगे जो हर काम अपने हाथों से करना पसंद करते हैं। यदि हफीज मियाँ अपना तबेला बनाने के पहले कन्नी, बसूली, गुनिया, सहाबल चलाना सीख लेते तो उनकी दीवार तिरका तीन न बनती। यदि वे ट्रैक्टर की स्टेयरिंग पकड़ने के पहले ट्रैक्टर चलाने का ड्राइविंग लाइसेंस प्राप्त कर लेते तो वह छह माह तक अस्पताल में न रहते। गाँव के लोग जब उस तबेले की ओर जाते हैं तो कहते हैं–

"यह हफीज मियाँ का बनाया हुआ तबेला है।"

जब कोई गाँव का आदमी ट्रैक्टर लेकर खेतों की ओर जोतने जाता है तो बड़े बुजुर्ग उसको टोक कर कहते हैं–

"हफीज मियाँ की तरह ट्रैक्टर मत चलाना"

फिर भी हफीज मियाँ के अदम्य साहस ने कम से कम अपनी पहिचान तो बना ही ली थी। बहुत दिनों तक गाँवों में हफीज मियाँ के तबेले और हफीज मियाँ के ट्रैक्टर चलाने के किस्से तो चलते ही रहेंगे।

मैं हफीज मियाँ को सलाम करता हूँ। दुनिया में हफीज मियाँ जैसे बहुत कम लोग होते हैं। ऐसे ही लोग दूसरों के लिए नसीहत बनते हैं। यदि आदमी अपना काम स्वयं करने लगे तो दूसरे लोगों पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। जो लोग दूसरों पर ज्यादा निर्भर रहते हैं वही दूसरों का ज्यादा शोषण करते हैं। दूसरों पर ज्यादा निर्भर रहने वाले लोग अत्याचारी होते हैं, अपराधी होते हैं, इनमें से कम से कम छह प्रतिशत लोग बलात्कारी भी हो सकते हैं। जो लोग सारा कार्य अपने हाथों से करते हैं वे सच्चरित्र होते हैं। अपराधी नहीं होते हैं क्योंकि वे अपना सारा समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत करते हैं। जिस आदमी के पास खाली समय होता है वह ज्यादा खुराफात करता है। ऐसे मनुष्य देश के लिए भार होते हैं। वह देश बहुत शक्तिशाली होता है जिस देश के लोग हफीज मियाँ जैसे मेहनती होते हैं। हफीज मियाँ को मैंने कभी भी बीमार होते नहीं देखा। वास्तव में परिश्रमी लोग बहुत कम बीमार रहते हैं। कामचोर लोग ज्यादा बीमार रहते हैं उनके कारण उनका देश भी बीमार रहता है। हफीज मियाँ जैसे लोग जिस देश में रहते हैं, वह देश बहुत ही स्वस्थ रहता है।

वास्तव में आदमी जो कृति स्वयं निर्माण करता है उसको बहुत ही आत्मीय सन्तोष मिलता है। उसको कोई नया कार्य करने की ललक होती है। धुन होती है। ऐसी धुन बहुत कम लोगों में होती है। जिन लोगों में ऐसी धुन सवार हो जाती है वे लोग राष्ट्र का निर्माण करने में अहम भूमिका निभाते हैं। देश ऐसे लोगों पर नाज करता है। लेकिन कभी-कभी इनकी धुन गलत रास्ते पर चली जाती है जिसके कारण उनको नुकसान उठाना पड़ता है। ऐसे लोगों का नुकसान देश की क्षति में शामिल हो जाता है। क्योंकि उनमें काम करने की धुन तो होती है लेकिन तकनीक नहीं। कार्य की सम्पूर्णता में तकनीक का बहुत योगदान होता है। काश ऐसे लोगों के पास तकनीक भी होती। मैं हफीज मियाँ को कंजूस नहीं मानता हूँ।

हफीज मियाँ के छोटे भाई का कत्ल

हफीज मियाँ का छोटा भाई खेती-बाड़ी करता था। वह भी एक सीधा-साधा इंसान

था। उसके खेत एक गाँव के कुर्मी जगन्नाथ के खेतों से जुड़े थे। यह परिवार गाँव के कुर्मियों में मालदार व दबंग माना जाता था। पक्का घर था। बहुत खेत थे। जगन्नाथ का बड़ा लड़का अपने को किसी भी ब्राह्मण, ठाकुर, यादव व कुर्मियों से छोटा नहीं समझता था। सदैव तेल से भीगी हुई लाठी लेकर गाँव में चलता था। कुड़हा माई मन्दिर से लगभग 600 गज दूर पर तालाब के ऊपर हफीज मियाँ के छोटे भाई के खेत जगन्नाथ कुर्मी के खेतों से लगे थे। हफीज मियाँ का भाई खेतों की सिंचाई तालाब में बेड़ी डालकर कर रहा था। लेकिन पानी ले जाने के लिए नाली जगन्नाथ के खेतों से होकर जाती थी। थोड़ा-सा भाग जगन्नाथ के खेतों का पड़ता था। जहाँ से पानी निकलने के लिए नाली खोदनी थी। हफीज मियाँ के छोटे भाई ने जगन्नाथ के खेत के थोड़े भाग को खोदकर नाली बना ली थी। उसी समय जगन्नाथ का बड़ा लड़का लाठी लेकर वहाँ पहुँच गया, बोला—"मेरे खेतों से होकर यह नाली नहीं जाएगी।"

हफीज मियाँ का भाई बोला—"फिर हमारे खेतों की सिंचाई कैसे होगी? हम उस नाली को सिंचाई करने के बाद समतल कर देंगे।"

"तू चाहे जैसे सिंचाई कर लेकिन मेरे खेतों से तू पानी नहीं लेकर जाएगा।"

कहा-सुनी बढ़ गई। उसने कहा, "मैं यहीं से पानी लेकर जाऊँगा।" उसके हाथ में फावड़ा था। जगन्नाथ के लड़के के हाथ में लाठी थी। आपस में जोरदार भिडंत होने लगी। जगन्नाथ का लड़का लम्बा था। हफीज मियाँ का भाई छोटा था, लेकिन बदन बहुत गठीला था। मुसलमानों के गाँवों में केवल तीन ही घर थे। वे सभी इकट्ठे हो गए। कई कुर्मी परिवार इकट्ठे हो गए। जगन्नाथ के लड़के ने सेला मारकर हफीज मियाँ के भाई का कत्ल कर दिया। मुझे याद है। खेतों में मरे पड़े हफीज मियाँ के भाई को गाँव वालों के साथ मैं भी उसको देखने गया था।

पुलिस ने जगन्नाथ के लड़के को पकड़ कर थाने में बंद कर दिया। फिर उसे जेल भेज दिया गया। बहुत दिनों बाद उसकी जमानत हो गई। केस चला। जगन्नाथ के लड़के और जगन्नाथ ने गवाहों को खूब डराया-धमकाया कि उसके खिलाफ गवाही न दें। उन्होंने उनके घर के गवाहों से कहा जो वहाँ कत्ल के समय मौजूद थे—'यदि तुम लोगों ने हमारे खिलाफ गवाही दी तो तुम्हें भी जान से मार दिया जाएगा।'

सभी डर गए। कुछ मजदूर थे जो चश्मदीद गवाह थे। मारे जाने के डर से कोर्ट में जगन्नाथ के लड़के के खिलाफ गवाही नहीं दी। जगन्नाथ का लड़का तीन साल के अन्दर बेदाग छूट गया था। कोर्ट ने तो अपना जजमेंट सुना दिया था। लेकिन अभी प्रकृति का जजमेंट आना शेष था। कहते हैं यदि कोई आदमी किसी का कत्ल करता है तो उसका भी कत्ल हो जाता है या यदि कोई कातिल

सबूतों के अभाव में न्यायालय से बेदाग छूट जाता है तो प्रकृति उसे जरूर दंडित करती है। इसमें कोई शक नहीं है। जगन्नाथ का लड़का कानून की गिरफ्त से बेदाग छूट गया था, लेकिन प्रकृति ने उसको ऐसा दण्ड दिया कि वह पागल हो गया। वह पागल गाँव की गलियों में नाचता रहता था। खाने-पीने की सुध नहीं रहती थी। वह नंग-धड़ंग सभी जगह घूमता रहता था। प्रकृति उसे नचा रही थी। वह चारों तरफ नाच रहा था।

गुन्दा महतो

मेरे गाँव का गुन्दा महतो एक किसान था। जो कुर्मी जाति यानी पिछड़ी जाति के थे। यह व्यक्ति भी गाँवभर में चर्चित हो गया था। काला भुजंग आदमी था जो सदैव एक धोती पहने रहता था। नंगा बदन रहना उसकी आदत बन गई थी। बहुत ही मालदार था। केवल तीन लोग थे उसके परिवार में, पति, पत्नी और एक लड़की। पता नहीं वह बदन पर कुर्ता क्यों नहीं पहनता था। गर्मी, बरसात, सर्दी, मैंने उसे कभी कुर्ता या कमीज पहने नहीं देखा। क्या वह एक योगी था। योगी लोग भी इतनी कठिन तपस्या नहीं करते हैं। उसके पास कई भैंसें थीं। वह लोग भैंसों के दूध से घी बनाते थे। गाँव के लोग उनके यहाँ का घी बहुत पसन्द करते थे। न वह स्वयं दूध पीता था और ना ही लड़की और पत्नी को दूध पीने देता था। वह सारे दूध को जमा देता था। घी निकालने के बाद मट्ठा बनता था। पूरा परिवार वही मट्ठा पीता था। वह बहुत ही हट्टा-कट्टा था। पत्नी दुबली-पतली थी। दोपहर में खेतों से गेहूँ की फसल काटने के लिए कभी भी मजदूर नहीं रखता था। तीनों प्राणी स्वयं फसल काटते थे। बैलगाड़ी में लादकर खलिहान में इकट्ठा करते थे। फिर फसल को मांडकर साफ गेहूँ ढोकर घर लाते थे।

होली के त्यौहार में पास के ही गाँव बुढ़ावा में बाजार लगती थी। होली के त्यौहार में लोग घरों में गुजियां बनाते हैं। काजू-बादाम खोया में मिलाकर गुजिया बनाते हैं। गुन्दा महतो केवल पन्द्रह रुपये ही खर्च करता था। पन्द्रह रुपये के थोड़ी से गरी, छुआरे, किशमिश, चिरौंजी लाता था। इस तरह उसने बहुत सारा पैसा इकट्ठा कर लिया था। चोरी के डर से एक भड़भूजा (भुर्जी) के घर रखता जो गल्ला खरीदने और बेचने का कार्य करता था। लेकिन वही भड़भूजा उसका पूरा पैसा बेईमानी से दबा गया। पर महतो यह बात किसी से कह भी नहीं सकता था कि उसने उसको इतना पैसा दिया था। वास्तव में यह कहावत ऐसे ही लोगों के लिए बनाई गई है।

"मेहनत कोई करे मौज दूसरे करें।"

गाँव का बेईमान भुर्जी

लेकिन गाँव में उस भुर्जी की बेइमानी की पोल खुल गई थी। लोग उसको शक की निगाहों से देखने लगे थे। उससे लोग सतर्क हो गए थे। इस घटना के पहले उसकी गाँव में एक ईमानदार व्यापारी की छवि थी। वास्तव में जो लोग ज्यादा ईमानदारी का दिखावा करते हैं, ईमानदारों जैसा जीवन व्यतीत करते हैं, धन-रुपया खूब हासिल कर लेते हैं और सुखमय जीवन व्यतीत करते हैं। वास्तव में उनका यह साम्राज्य ईमानदारी से बनाया हुआ नहीं होता है। बल्कि उसमें बेईमानी की नींव पड़ी होती है। लेकिन जो आदमी जीवन भर नंगे रहकर खून-पसीना बहाकर धन संचित करते हैं। यदि उनका धन कोई बेईमानी करके हड़पता है तो वह धन उसके लिए अभिशाप बन जाता है। हरदम नाग बनकर डंसता रहता है। देहातों में एक कहावत बहुत ही प्रचलित है। यदि गाढ़ी कमाई का धन जमीन के अन्दर छिपा कर गाड़ दिया जाता है तो वह सुरक्षित रहता है। इसका इस्तेमाल वही व्यक्ति कर सकता है जो इस धन को छिपाता है। यदि कोई दूसरा व्यक्ति इस धन को छूता है तो नाग वहाँ प्रकट हो जाता है और उसको काट लेता है। इस कहावत में क्या सच्चाई है? यदि इसका कोई वैज्ञानिक विश्लेषण किया जाए तो चाँदी के सिक्कों में या सोने के सिक्कों में जरूर कोई ऐसी बात है या गन्ध है जो सर्पो को अपनी ओर आकर्षित करती है। नाग धन से भरे घड़े को अपना अंडा समझकर उसको सेता है। इसीलिए जब कोई आदमी उस घड़े को छूता है तब सर्प उसको नुकसान पहुँचा देता है। गाँवों में फैला यह अंधविश्वास है कि नाग देवता धन की रक्षा करते हैं।

हाँ यह बात जरूर है कि गाढ़ी कमाई का धन जिस आदमी द्वारा हड़पा जाता है वह आदमी फलता-फूलता नहीं है। उस भुर्जी ने उसी धन से अपने लड़के की शादी खूब शान-शौकत से की। बहू को सोने के गहनों से लाद दिया। गुन्दा महतो गाँव में यह कहते सुना गया कि "भुर्जी ने अपने लड़के की शादी में बेईमानी वाला धन लगाया है।" जब भी वह भुर्जी की शान-शौकत को देखता और आह भरता था। उसकी आह भुर्जी के परिवार को भस्म करने के लिए काफी थी।

किसी की आह से बचिए। इसमें बहुत बड़ी ताकत होती है। आप ज्वालामुखी के लावों से बच सकते हैं लेकिन आदमी के अन्दर ज्वालामुखी के आह रूपी लावों से नहीं बच सकते हैं। बच भी गए तो पनप नहीं सकते हैं। भुर्जी की बहू अपने मायके से एक नौकर को लेकर अपनी ससुराल आई थी। वह नौकर सदैव उसी बहू के कमरे में रहता था। घर की सफाई केवल बहू के कमरे की करता था। घर में एक-एक करके सोने के आभूषणों की चोरी होने लगी। नौकर पर शक

गया। लेकिन बहू ने इसका विरोध किया। बहू घर में तांडव करने लगी। भुर्जी की घरेलू जिन्दगी तबाह हो गई। एक-एक करके सारे घर का सोना-चाँदी गायब हो गया।

बाद में रहस्य खुला कि वह नौकर जिसको बहू अपने साथ मायके से ससुराल लेकर आई थी वह उसका प्रेमी था। इस बात को लेकर घर में कलह मच गई। धीरे-धीरे बहू ने घर के सारे जेवर अपने प्रेमी को दे दिए थे। घर में एक घटना ऐसी घटी जिसमें बहू आग में जल गई, लेकिन मरी नहीं। बहू का भाई वकील था। उसने दहेज हत्या के प्रयास का आरोप लगाकार सास-ससुर और लड़के को जेल में बंद करवा दिया। न्यायालय से उन तीनों को कई सालों की सजा करवा दी।

वास्तव में यह बेईमानी के धन का आना था जिसने अपना रंग दिखाया। गुन्दा महतो ने रात-दिन एक करके धन कमाया था। सारे जीवन नंगा बदन रहा था। धूप से उसका शरीर और काला हो गया था। काले बदन से निकला पसीने की कमाई का धन काला नाग बन गया था जिसने उस व्यापारी के पूरे परिवार को डस लिया था। लगता है संसार में कोई ताकत होती है जो चुपचाप लोगों के क्रिया-कलापों पर नजर रखती है। वह उनके पाप का घड़ा धीरे-धीरे भरता देखती रहती है और जब वह फूटता है उनको स्वाहा कर देता है। आपका परिश्रम ही परम ताकत है। आपके द्वारा किए गए नेक व भलाई के कार्य इस परम ताकत में जुड़ते जाते हैं। अगर आप बेईमानी का रास्ता अपनाते हैं, निर्दोषों की हत्या करते हैं। असहायों को सताते हैं तो ये कार्य आपके परम ताकत से घटते जाते हैं। ऐसी ताकत बन कर आपका संहार कर देते हैं। अच्छे कार्यों और बुरे कार्यों की जंग जारी रहती है। अंत में अच्छे कार्य ही जीतते हैं। अच्छे कार्यों से ही इस ब्रह्मांड का संचालन होता है।

चारपाई के ऊपर एक काला सर्प चढ़कर मेरे सर के नजदीक से गुजरा

मैं, मैथ के स्थान पर बाइलोजी विषय लेकर एक साल के लिए नेहरू इंटर कॉलेज बिन्दकी से आस्तिक मुनि इण्टर कॉलेज कोरिया, कानपुर में पढ़ने लगा था। यह बिल्कुल गाँव में स्थित कॉलेज है। ग्रामीण विद्यार्थियों के लिए वास्तव में यह कॉलेज एक वरदान के समान है। जो गरीब छात्र-छात्राएँ शहर जाकर अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर पाते हैं। इस ग्रामीण कॉलेज में पढ़ते हैं। गाँव के किनारे पूर्व दिशा में एक छात्रावास है जिसमें 16 कमरे थे। दो-दो लड़के इन कमरों में रहते थे। जो दूर के गाँवों के लड़के थे। मेरा गाँव वहाँ से 21 किमी दूर था। मैं एक जाटव लड़के के साथ बिल्कुल एक कोने के कमरे में रहता था। त्यौहारों में छात्रावास

के लड़के प्रायः अपने-अपने गाँव चले जाते थे। सोलह कमरे एक लाइन में बने थे। शायद नागपंचमी का त्यौहार था। छात्रावास में केवल मैं और मेरा जाटव मित्र रह गए थे। मैं कमरे के बरामदे के बाहर चारपाई पर लेटा 'विलियम शेक्सपियर' का ड्रामा 'मर्चेंट ऑफ वेनिस' पढ़ रहा था। मेरा मित्र मेरे पैरों की तरफ चारपाई में बैठा सुन रहा था। उसको अंग्रेजी समझने में परेशानी हो रही थी। वह मुझसे प्ले की अंग्रेजी को हिन्दी में रूपान्तर करके समझाने को कह रहा था। मैं अंग्रेजी की लाइनें पढ़ता जाता था फिर उनका अर्थ हिन्दी में बताता जाता था। उसने मुझसे एकाएक कहा—

"सोनकर पीछे सरक आओ।"

"क्या बात है?"

"सरको तो।"

"अच्छा, अच्छा, अच्छा।"

मैं पीछे सरक कर चारपाई की अदवाइन पर बैठ गया। मैंने देखा—एक काला नाग चारपाई में चढ़कर मेरे सर के पास से चलकर चारपाई से नीचे उतर रहा था। मित्र ने काले नाग को मेरे सर के बगल से जाते हुए देखा था।

लोग कहते हैं कि साँप चारपाई पर नहीं चढ़ता है लेकिन हमने साँप को चारपाई पर चढ़ते देखा था। गाँवों में एक कहावत और भी है कि—जिस आदमी के सर के बगल से साँप निकल जाता है वह आदमी बहुत ही भाग्यशाली होता है। पर मैं नहीं जानता कि मैं भाग्यशाली हूँ कि नहीं।

हाँ, दो बार मेरी जान जरूर बची है। एक बार मैं ब्राह्मणों की दीवार से लगे एक भुर्जी महादेव बाबा के घर की चौपाल में जाकर बैठ गया था जो बिल्कुल मेरे घर के सामने थी। वहाँ पर पाँच-छः लोग और बैठे थे। कई रोज की वर्षा के बाद सूरज निकला था। मैं चौपाल के अन्दर मुश्किल से एक मिनट रुका था। मेरे हटते ही सभी लोग चौपाल से बाहर चले गए थे। बस तुरन्त चौपाल की छत ढह गई थी। सभी लोग चौपाल की छत के नीचे दबने से बच गए थे। सभी की जान बचना क्या यह मात्र संयोग था या कोई परमशक्ति सभी को बचा रही थी या सभी के नेक कार्य उनकी जान को बचा रहे थे।

दूसरी बार मैं उस समय बचा था जब मैं अपनी एक तन्दुरुस्त भैंस को तालाब में पानी पिलाने ले जाता था। सड़क बैलगाड़ियों के पहियों के चलने से दो हिस्सों में बँट गई थी। दोनों पहियों के चलने के स्थानों पर पहियों के बराबर गड्ढे हो गए थे। मैं भैंस की पीठ पर बैठा था। बड़े-बड़े गड्ढों से गुजर रहा था। एकाएक मैं भैंस की पीठ से उछलकर गड्ढे में आगे गिर पड़ा। मेरी भैंस मुझे फाँदते हुए निकल गई। यदि मेरी भैंस के पैर मेरे ऊपर पड़ जाते तो कुछ भी हो सकता था।

शायद आदमी से ज्यादा जानवर समझदार होता है। वह किसी का अहित नहीं कर सकता है। काश आदमियों में भी जानवरों जैसी बुद्धि होती।

कोरिया इंटर कॉलेज, कानपुर देहात में बांग्लादेश आजाद होने का जश्न

सन् 1971-72 की बात है। मुझे इण्टर बाइलोजी विषय लेकर पढ़ने के लिए आस्तिक मुनि इंटर कॉलेज कोरिया, कानपुर देहात जाना पड़ा। मैं गणित विषय में इंटर में सफल नहीं हुआ था। मेरे धुन सवार थी कि मैं डॉक्टर बनूँगा। डॉक्टर बनकर देहात में क्लीनिक खोलूँगा। गाँववासियों की मुफ्त सेवा करूँगा। फिर एम. पी. का इलेक्शन लड़ूँगा। बचपन में मैं ऐसी-ऐसी योजनाएँ बनाया करता था। जब बांग्लादेश को भारत ने आजाद करा दिया था। पाकिस्तान को मुँह की खानी पड़ी थी। जिस समय यह समाचार रेडियो से आया, कॉलेज के सभी छात्र और अध्यापक कॉलेज के खुले मैदान में इकट्ठे हो गए थे। पाकिस्तान के राष्ट्रपति का पुतला जलाया गया था। कॉलेज में खुशियाँ मनाई गई थीं। मैं समझता हूँ कि जब मेरे देहात के कॉलेज में बांग्लादेश के आजाद होने का इतना जश्न मनाया जा रहा था तब पूरे हिन्दुस्तान कितनी खुशियाँ मनाई गई होंगी। मैं भाषण बहुत अच्छा देता था। अध्यापकों और विद्यार्थियों के साथ मैंने भी भारत की विजय पर भाषण दिया था—"कितनी ही माताओं ने अपनी गोद सूनी कर दी। कितनी ही सुन्दरियों ने अपने सर का सिन्दूर धो दिया। यह सब किसलिए? सीधी-सी बात—आजादी के लिए। बांग्लादेश में पहले गुलामी का झंडा लहराता था। वह परतन्त्रता, शोषण और अत्याचार का प्रतीक था। भारत की मदद से वहाँ के क्रान्तिकारियों ने उस झंडे को उखाड़ फैंका है। समानता, स्वतन्त्रता, प्रजातन्त्र का झंडा फहरा दिया है। तानाशाही का खात्मा कर दिया है। यह भारत की कूटनीति की जीत है। श्रीमती इंदिरा गाँधी के सफल नेतृत्व की जीत है। यह हमारे जवानों की जीत है। यह हम सबकी जीत है।"

मेरे जोश भरे भाषण को सुनकर विद्यार्थियों और अध्यापकों ने खूब तालियाँ बजाईं। लड़कों ने मुझे अपने कंधों पर उठा लिया था। पूरे कॉलेज में खुशी और उत्साह का माहौल था। ढोल-नगाड़े खूब बज रहे थे। ढोल-नगाड़े बजने से जोश दोगुना हो जाता है। ढोल-नगाड़े बजाने वाले इन दलित भाइयों में भी उत्साह देखा जा सकता है। ऐसा समय और अवसर बहुत कम आता है। जब पूरा देश नाचता है तब ऐसा लगता है पूरा देश एकता की डोर में बँधा है। उस समय सारी दूरियाँ, भेदभाव मिट जाते हैं। आज वास्तव में देश में ऐसे ही एकता के मजबूत सूत्र की जरूरत है। जहाँ पर प्यार, मोहब्बत, भाईचारा हो। हर इंसान में इंसानियत हो। देश के लिए मर-मिटने का जुनून हो।

प्रो. एम.एम. दास का अनोखा प्रश्न, मेरा अनोखा जवाब

अंग्रेजी के प्रो. एम.एम. दास बी.ए. में पोइट्री पढ़ाया करते थे। विद्यालय के अंग्रेजी डिपार्टमैंट में ग्राउंड और प्रथम तल पर कई कमरे हैं। एक बड़ा हाल प्रथम तल पर है। जिसमें लगभग 60 विद्यार्थी बैठकर पोइट्री, ड्रामा पढ़ा करते थे। प्रो. एम.एम. दास एक दिन विलियम वर्डसवर्थ की अंग्रेजी कविता 'She Grew in Three Years' (वह तीन साल में जवान हो गई), पढ़ा रहे थे। पूरा हॉल खचाखच भरा था। मौसम बहुत सुहावना था। सम्भवतः बसंत का महीना था। इस यूनिवर्सिटी के कैम्पस में लगे विभिन्न प्रकार के पेड़ों के फूलों से सुगन्ध आ रही थी। शायद 'वर्डसवर्थ' की कविता को पढ़ाते वक्त उत्तेजक बना रही थी। लगता था कोई मदमस्त यौवना गुलाब के फूलों का गुच्छा अपने सर के बालों पर लगाकर कमरे में घुस आई हो। ऐसा प्रतीत होता था कि विलियम वर्डसवर्थ की नायिका कमरे में प्रवेश करके प्रो. एम.एम. दास पर मोहित हो गई हो और समस्त विद्यार्थियों को अपनी ओर आकर्षित कर रही हो। प्रो. एम.एम. दास उस नायिका के वर्णन में पूरी तरह खो गए थे। वह यह देखना चाहते थे कि विद्यार्थी इस नायिका की तरफ कितना आकर्षित हुए हैं। उन्हीं ने सबसे पीछे बैठे विद्यार्थी से प्रश्न किया–

"What is difference between Mid Night and Mid Day"

क्योंकि कविता में Mid Night शब्द था। वह उस विद्यार्थी के उत्तर से संतुष्ट नहीं हुए। उन्होंने यही प्रश्न पीछे बैठे लड़कों से करते-करते आगे की बैंचों पर बैठे लड़कों तक आ गए। वह किसी भी विद्यार्थी के प्रश्न से सन्तुष्ट नहीं हुए। 59 विद्यार्थी उनको पूर्णतया संतुष्ट नहीं कर पाये थे। अन्त में मैं 60वें नम्बर पर बैठा था। अन्त में उन्होंने मुझसे कहा मि. रूपनारायण आप बताइए। मैं खड़ा हो गया, क्योंकि 59 लड़के खड़े थे। मैंने जवाब दिया–

"Not only men but all the object of nature sleep in the mid night but in the mid day, there is a noise. In the mid night there is meditation."

इस उत्तर को सुनकर समस्त विद्यार्थी जोर-जोर से हँसने लगे। प्रोफेसर साहब ने सभी हँस रहे विद्यार्थियों को जोर-जोर से डाँटा। एकाएक सन्नाटा छा गया फिर मुझसे बोले–"जैसे रात्रि में सूरज सोता है।"

मैंने कहा–"Yes Sir"

वह बोले–"Very Good, Very Good, Very Good" यह सबसे अच्छा उत्तर है, ऐसा मैंने भी नहीं सोचा था।"

समस्त विद्यार्थी मुझे आदर की दृष्टि से देख रहे थे। वह ऐसा महसूस कर

रहे थे कि मैं क्लास का सबसे ब्रिलियंट स्कॉलर हूँ फिर विद्यार्थियों ने प्रोफ़ेसर साहब से अनुरोध किया–

"सर! आपने क्या सोचा था।"

उन्होंने उत्तर दिया–"मैंने सोचा था कि अर्ध रात्रि में प्रेमी और प्रेमिका मिलते हैं।"

यह घटना मैंने अपने बड़े भाई साहब श्री राजाराम सोनकर को घर आकर बताई। उन्होंने मुझे गले से लगा लिया और बोले–"इसी तरह प्रभावित करो। यह गुण कुछ लोगों में होता है। अभी तुम केवल कुछ लोगों को प्रभावित कर रहे हो। एक दिन तुम असंख्य लोगों को प्रभावित करोगे।"

मलिन बस्ती के 60 बच्चों को पढ़ाना

जब मैं इलाहाबाद विश्वविद्यालय में पढ़ रहा था। शाम को गरीब दलितों के बच्चों को राजापुर में पढ़ाया करता था। देहात का पढ़ा-लिखा होने के कारण बच्चों को 20 तक का पहाड़ा, अंग्रेजी हिन्दी की वर्णमाला, मात्राएँ एवं एक से लेकर 10 तक के बच्चों का हिन्दी से अंग्रेजी का ट्रांसलेशन अच्छा करा दिया था। बच्चे अंग्रेजी बोलने लगे थे। मैं वहाँ पर मास्टर साहब के नाम से प्रसिद्ध हो गया था। मुझे लड़कों और लड़कियों को पढ़ाने में बहुत आनन्द आता था। गरीब बच्चों को पढ़ाना मुझे बड़ी ही आत्मीयता प्रदान करता था। मैंने किसी भी माँ-बाप से बच्चों की फीस नहीं लेता था। फिर भी गरीब माँ-बाप ने पाँच-पाँच रुपये प्रति बच्चे देना चाहा। मैंने पैसे नहीं लिए। एक खुला मैदान था। सभी बच्चे जमीन पर बैठ जाया करते थे। कॉपी में लिखाया करता था। एक कुर्सी-मेज का प्रबन्ध मेरे बैठने के लिए अभिभावकों ने कर दिया था। वास्तव में यदि पढ़े-लिखे दलित जहाँ रहते हों अपने आस-पास के गरीब बच्चों को इसी तरह पढ़ाए तो डॉ. अम्बेडकर का मिशन पूरा हो सकता है। सभी दलित शिक्षित हो सकते हैं। इस कार्य में त्याग, परोपकार और तपस्या की जरूरत होती है।

वहीं पर मैं एक पटेल जमींदार के लड़कों को उसके घर जाकर ट्यूशन पढ़ाता था। उसके पास बहुत सारी जमीन थी। एक दिन वह मुझसे बोले–"मास्टर साहब मेरी 500 वर्गमीटर जमीन राजपुर स्थित मेरे बंगले के पास है। आप अपने नाम रजिस्ट्री करा लो। जो इच्छा हो दे देना।"

"मैं जमीन-जायदाद का क्या करूँगा। हमारे पास अभी पैसा नहीं है। हम तो अभी पढ़ रहे हैं।"

"मैं आपको ऐसे ही रजिस्ट्री कर दूँगा।"

मैं तैयार नहीं हुआ। बस एक धुन सवार थी, पढ़ कर अफसर बनने की।

मुझे क्या पता था कि मैं आगे चलकर जमीन-जायदाद की रजिस्ट्री करने वाला पी.सी.एस. (अलाइड) ऑफिसर बनूँगा। क्या इस तरह की घटनाएँ मनुष्य के भविष्य के बारे में कुछ संकेत देती हैं। मुझे लगता है कि आदमी की नेक विचारधारा, लगन, मेहनत, परोपकार के कार्य उसको सुनहरे भविष्य की ओर खींचते जाते हैं। आदमी अपने इन कार्यों से स्वयं भविष्य का निर्माण कर देता है।

बिन्दकी से सबसे ज्यादा खटिक आई.एस.एस. व पी.सी.एस. बने

तहसील बिन्दकी व कस्बा बिन्दकी बहुत चीजों के लिए विश्व प्रसिद्ध है। बिन्दकी कस्बा पीतलों के बर्तनों के लिए विश्व भर में जाना जाता है। यहाँ की गुड़ मंडी देशभर के व्यापारियों के लिए स्वर्ग है। गंगा-यमुना के दुआब पर बसा यह कस्बा बहुत ही समृद्धशाली है। राष्ट्रीय कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी की यह जन्म और कर्मभूमि रही है। पूर्व प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह का निर्वाचन क्षेत्र रहा है जो फतेहपुर में शामिल है। इस कस्बे का सौभाग्य है कि ऐसा तेजस्वी पिछड़ों और दलितों का हक दिलाने वाला एक ऐसा महापुरुष इस क्षेत्र से पहली बार देश का प्रधानमंत्री बना जिसने पिछड़ों के लिए ऐसा काम कर दिया जिसका नाम इतिहास में दर्ज हो गया। हो सकता है इस काम से नाम मात्र के सवर्णों का नुकसान हुआ है। लेकिन सदियों से खानाबदोशों की जिन्दगी बिता रहे अति पिछड़ों को बहुत ही लाभ हुआ है। इस काम से दलितों को भी बहुत फायदा हुआ है। पहले हर बार यह आवाज उठती थी कि दलितों का रिजर्वेशन समाप्त करो। अब यह आवाज दब गई है। अब यह आवाज आने लगी है कि दलितों का रिजर्वेशन बनाए रखो। पिछड़ों का रिजर्वेशन बन्द करो।

मुझे एक घटना और याद आ रही है। मैं नेहरू इंटर कॉलेज बिन्दकी में हाईस्कूल में पढ़ रहा था। दलित छात्रावास में रह रहा था। शाम के वक्त मैं कस्बे के अन्दर से होकर कस्बे के बाहर हॉस्टल के बारह लड़कों के साथ टहलने जा रहा था। मैं सबसे आगे था। उसी समय पूर्व प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के बड़े भाई राजा संतबक्श सिंह वहाँ से निकल रहे थे। वे डॉ. बृजलाल वर्मा के विरुद्ध एम.पी. का चुनाव लड़ रहे थे। मैंने उनका अभिवादन किया। वह जीप से नीचे उतर आए। मैंने उनसे कहा—''सर! आपकी ही विजय होगी।''

उन्होंने मेरे सर पर थपथपी दी और बोले—''धन्यवाद, आप लोगों को कोई तकलीफ हो तो मुझे बताइए। मेरी जीत आप सबके सहयोग से होगी और मेरी जीत आप सबकी जीत होगी।''

वास्तव में महान आदमी की महानता बहुत दूर से झलकती है। उस वर्ष राजा संत बक्श सिंह बहुत मतों से जीत गए थे। आज तक मैंने रास्ते चलते या

बातों के दौरान जिस भी आदमी के लिए भविष्यवाणी की है वह शत-प्रतिशत सत्य साबित हुई है। मैं कोई ज्योतिषी नहीं हूँ, न ही मैं ज्योतिष के बारे में जानता हूँ लेकिन मैं आदमी को देखकर उसकी बातों को सुनकर अनुमान लगा लेता हूँ यह मेरा तुक्का भी हो सकता है।

नेहरू इंटर कॉलेज बिन्दकी उस समय जिला फतेहपुर के सभी कॉलेजों में पढ़ाई में श्रेष्ठ माना जाता था। पढ़ाई बहुत अच्छी होती थी। अध्यापक, प्रिंसिपल सभी मेहनत से पढ़ाया करते थे। नेहरू इंटर कॉलेज से पढ़ने के बाद अधिकतर लड़के इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद पढ़ने जाते थे।

बिन्दकी तहसील का नेहरू इंटर कॉलेज खटिक छात्रों के लिए वरदान साबित हुआ है। बिन्दकी तहसील के खटिक जाति के लोग बहुत आई.ए.एस., पी.सी.एस. व अन्य नौकरियों में हैं। शायद हिन्दुस्तान की यह पहली तहसील है जिसने खटिक जाति के सबसे ज्यादा अधिकारी पैदा किए हैं। श्री आर.डी. सोनकर, विजय वर्धन सोनकर, स्व. देवीराम; वर्तमान में श्री दयाराम आई.ए.एस., श्री अजय कुमार सोनकर आई.आर.एस. आदि इसी तहसील के हैं। श्री राजाराम सोनकर, जुग्गीलाल सोनकर, स्व. सुखराम सोनकर, बदलू प्रसाद सोनकर, रामस्वरूप सोनकर, श्रीमती उर्मिला सोनकर, रूपनारायण सोनकर आदि पी.सी.एस. ऑफिसर इसी तहसील से हैं और नेहरू इंटर कॉलेज बिन्दकी से फिर इलाहाबाद विश्वविद्यालय में पढ़कर आए हैं।

आर.डी. सोनकर को ब्राह्मणों ने गाड़ी से नीचे उतारा

मैं आर.डी. सोनकर से जुड़ी दलित उत्पीड़न की एक घटना आपको बताने जा रहा हूँ। जब श्री आर.डी. सोनकर उच्च पदों पर उ.प्र. सरकार में कार्यरत थे। साल में एकाध बार अपने गाँव सौंह (बिन्दकी) जाते थे। उनका घर गाँव के एक कोने में था। एक गली ब्राह्मणों की भी थी जो सोनकर साहब के मकान तक जाती थी। सोनकर साहब एक बार सरकारी गाड़ी में बैठकर अपने घर ब्राह्मणों की गली से जा रहे थे। गली के ब्राह्मणों ने इकट्ठा होकर उनकी गाड़ी को रोक लिया और श्री आर.डी. सोनकर को गाड़ी से नीचे उतारकर घर तक पैदल जाने के लिए विवश किया था। आर.डी. सोनकर जब भी अपने गाँव जाते थे गाँव के बाहर गाड़ी से उतरकर पैदल पैदल घर जाते थे। ड्राइवर सरकारी गाड़ी को चलाकर उनके पीछे-पीछे ले जाता था।

श्री आर.डी. सोनकर जैसे वरिष्ठ, नेक, योग्य, ईमानदार अधिकारी का कितना बड़ा अपमान वहाँ के ब्राह्मण करते थे। उन्होंने कोई प्रतिरोध नहीं किया वास्तव में यह आर.डी. सोनकर का दब्बूपन था या गाँव के ब्राह्मणों के प्रति

श्रद्धा थी या ब्राह्मणों के झूठे गरूर को और आसमान तक उठाने में उनकी मजबूरी थी।

यदि सौंह गाँव के ब्राह्मण एक दलित आई.ए.एस. को उसकी दलित जाति होने के कारण लज्जित कर सकते थे तो उन ब्राह्मणों के झूठे अभिमान को तोड़ना जरूरी था। पहली बार कलेक्टर बनने के बाद श्री आर.डी. सोनकर अपने गाँव पहुँचे थे।

जिस आदमी ने आई.ए.एस. बनकर पूरे गाँव का नाम रोशन किया था उस गाँव के ब्राह्मणों को दलित आई.ए.एस. का फूल-मालाओं से स्वागत करना चाहिए था। उन्होंने पूरे गाँव का ही नहीं बल्कि पूरे जिले का मान बढ़ाया था। लेकिन ब्राह्मणों के दिलों में आर.डी. सोनकर को गाड़ी से आता देखकर आग लग गई थी। यह आग अहंकार, ओछापन ब्राह्मण कुल में पैदा होने की उच्चता को दर्शा रही थी जो दलितों को अपने से बहुत नीचा समझते थे। जबकि वह ज्ञान, योग्यता और हुनर में उनसे बहुत ऊँचा था। जो एक जिले का बादशाह था। राजा था। प्रदेश सरकार का खेवनहार था। लेकिन उनके सामने वह बौना साबित हो रहा था। गाड़ी रोक कर ब्राह्मण आर.डी. सोनकर से कह रहे थे–

''गाड़ी से नीचे उतरिए रामदास तुम गाड़ी में बैठकर हमारी गली से नहीं निकल सकते हो।''

रामदास सोनकर कुछ समझ नहीं पाए, बोले–''क्या बात है ताऊ जी!''

''गाड़ी से नीचे उतरो तब बताऊँ!''

सोनकर साहब गाड़ी से नीचे उतर कर खड़े हो गए–''हाँ ताऊ जी बताइए क्या बात है?''

एक ब्राह्मण बोला–''रामदास तुम्हें इतना तो लिहाज होना ही चाहिए कि तुम हम लोगों की गली से गाड़ी में बैठकर मत जाओ।''

''इसमें क्या बुराई है ताऊजी?''

''तुम खटिक हो। हम खटिकों को इतना बड़ा सम्मान नहीं दे सकते कि वे हम लोगों को नीचा दिखाकर हम लोगों के सामने गाड़ी में बैठकर अपने घर जाएँ। थोड़ी दूर तो तुम्हारा घर है तुम पैदल चले जाओ।''

अपने सरकारी अर्दली और ड्राईवर के सामने एक कलेक्टर अपमानित हो रहा था। सारे गली के ब्राह्मण इकट्ठे हो गए थे। वायरलेस गाड़ी में था। वह पुलिस प्रशासन से सम्पर्क नहीं कर सकते थे। गाँव बिल्कुल शहर से दूर था। मजबूरन रामदास सोनकर को पैदल ही अपने घर जाना पड़ा।

अनपढ़, अशिक्षित व शिक्षित गाँव के ब्राह्मण एक दलित जिलाधिकारी को प्रताड़ित कर रहे थे। ब्राह्मणों के अहंकार ने एक दलित की वर्षों की घोर तपस्या के बाद जो मीठा फल उसे मिला था उसमें जातिवाद की सुई लगाकर उसको

जहरीला बना दिया था। उसकी प्रतिष्ठा, स्वाभिमान को अपने पैरों तले कुचल दिया था।

वहाँ पर भी एक हीरा आई.ए.एस. की जरूरत थी जो गाड़ी से नीचे उतरने से इंकार कर देता और गाड़ी को वापस बिन्दकी कस्बा लाता। सरकार से सारी हकीकत बताता। फोर्स लेकर के पुनः गाँव आता और अत्याचारी ब्राह्मणों को सबक सिखाता हुआ गाड़ी में बैठकर अपने घर जाता। स्वयं का और दलितों का स्वाभिमान बरकरार रखता। लेकिन रामदास सोनकर ने ऐसी हिम्मत नहीं दिखाई। यदि हिम्मत दिखाते तो यह घटना अन्य दम्भी ब्राह्मणों के लिए नसीहत बन जाती। समता का पाठ पढ़ना सीख जाते। सोनकर साहब ने तात्कालिक परेशानियों से बचने के लिए घमंडी ब्राह्मणों की बात मान ली। उनके झूठे सम्मान को और ऊँचाइयों तक ले गए। यह कोई छोटी घटना नहीं थी। पूरी की पूरी बिन्दकी तहसील में यह घटना दलितों, गैर-दलितों में प्रचारित हो गई थी। इस घटना को सुनकर जहाँ दलित बहुत ही आहत हुए वहीं ब्राह्मण फूलकर कुप्पा हो गए थे। आपस में बातें करते थे।

''साले एक दलित कलेक्टर को ब्राह्मणों ने उसकी गाड़ी में बैठकर अपने दरवाजे के सामने से नहीं निकलने दिया। उसको गाड़ी से नीचे खींचकर उतार दिया। वह पैदल ही अपने घर तक गया।''

वास्तव में हो सकता है आर.डी. सोनकर के सीधापन में ब्राह्मणों को सम्मान देना छिपा हो। वह अपनी महानता को दर्शा रहे हों। यदि ब्राह्मण उनकी गाड़ी न रोकते। ब्राह्मणों द्वारा गाड़ी रोके जाने के पहले यदि वह स्वयं गाड़ी से उतरकर अपने आप पैदल चलते तो इसमें उनकी नम्रता, महानता जाहिर होती लेकिन वहाँ पर ऐसा कुछ नहीं था। दलितों को सभी जगह संघर्ष करने की जरूरत है। चाहे दलित मजदूर हो या कलेक्टर। सभी जगह हिम्मत की जरूरत होती है। वह मजदूर कलेक्टर से बड़ा होता है, जो अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करता है। वह कलेक्टर मजदूर से भी छोटा हो जाता है जो सता, पावर, अधिकार होते हुए भी अपने मौलिक अधिकारों को गँवाता है। सवर्णों के सामने आत्मसमर्पण कर देता है। सरकार भी ऐसे जिलाधिकारी जिलों में तैनात करती है जो समाज में फैली छुआछूत, असमानता, गैर-बराबरी, अत्याचार-बर्बरता को जड़ से मिटाए। समतामूलक समाज का निर्माण करें। इतने महान् प्रशासनिक अधिकारी होते हुए भी सोनकर साहब ने इस बेरहम, कुटिल ब्राह्मणों के अपमान को कैसे चुपचाप सहन कर लिया?

सोनकर साहब जब अपने घर पहुँचे उनके चेहरे पर कलेक्टर बनने की खुशी धूमिल हो चुकी थी। माँ, बाप, भाइयों और अन्य दलितों की खुशी अपमान में बदल गई थी। सभी के चेहरे उतरे थे। सभी ब्राह्मणों की दबंगई की निन्दा कर

रहे थे। दलित जाति में पैदा होने का अभिशाप झेल रहे थे। यह घटना नेहरू इण्टर कॉलेज में पढ़ा रहे सौंह गाँव के एक लेक्चरार ने दूसरे अध्यापकों को बताई थी। मैंने लेक्चरार को अभिमानपूर्वक यह घटना बताते सुना था। यह घटना बताकर वह ब्राह्मण लेक्चरार बहुत गौरवान्वित हो रहा था।

लेकिन घटना का दूसरा पहलू भी मुझे मेरे फूफा ने बताया था, जिसको ब्राह्मणों ने छिपा लिया था।

मेरी सगी बुआ श्री आर.डी. सोनकर के चचाजात भाई पच्चू सोनकर को ब्याही थी। मेरे फूफा बहुत ही दबंग थे। जब उनको इस घटना का पता चला वह तमाम खटिकों, चमारों व पासियों के साथ उस ब्राह्मण मौहल्ले में पहुँच गए थे जहाँ उनकी गाड़ी को ब्राह्मणों ने रोक रखा था। सोनकर साहब पहले तो ब्राह्मणों का लिहाज करते रहे, जब ब्राह्मण नहीं माने तो सोनकर साहब ने अर्दली से वायरलेस से पुलिस को सूचना देने को कहा–''अर्दली इस नम्बर पर एस.पी. को फोन करो कि तुरन्त फोर्स लेकर सौंह गाँव आएँ।''

मेरे फूफा ने ब्राह्मणों से कहा–''आपने रामदास की गाड़ी क्यों रोक दी है?''

''यह गाड़ी आगे नहीं जाएगी।''

''क्यों नहीं जाएगी।''

''इसमें ब्राह्मणों की तौहीन है। कोई दलित हम लोगों के सीने पर चढ़कर कार में नहीं जा सकता।''

फूफा ताव दिखाते हुए बोले–''फिर इसमें आप लोगों की कौन-सी तौहीन हो गई। रामदास आपके गाँव का लड़का है। इसके कलेक्टर बनने से इस गाँव का नाम रोशन हुआ है। आप सभी को गर्व होना चाहिए।''

इसी गाँव में एक ब्राह्मण लेक्चरार थे, जिन्होंने रामदास को पढ़ाया था। वह बोले–''इसमें रामदास की कौन-सी तौहीन हो जाएगी। यदि वह गाड़ी से नीचे उतर कर पैदल 600 गज दूर चले जाएँगे।''

''इसमें तौहीन की कोई बात नहीं है। इसमें दलितों की इज्जत की बात है। इसमें दलितों का स्वाभिमान जुड़ा है। आप रामदास के गुरु रहे हैं। रामदास ने आपको देखते ही गाड़ी से नीचे उतर कर आप सहित गाँव के बुजुर्ग ब्राह्मणों के पैर छुए, उन्होंने तुम्हें इज्जत दी। आप भी रामदास को इज्जत दो।''

एक ब्राह्मण बोला–''यह तो पैर हमारे पहले भी छूते थे। अब कलेक्टर बनने के बाद हमारे पैर छू रहे हैं तो इसमें कौन-सी नई बात है।''

''नई बात है। ब्राह्मणों के लड़के इतने बड़े पद पर पहुँचने पर किसी भी बुजुर्ग दलित से नमस्ते तक नहीं करते हैं। उल्टे पढ़े-लिखे बुजुर्ग दलित उससे अभिवादन करते हैं। कलेक्टर बनने के बाद भी रामदास में गरूर नहीं है। आपका लिहाज कर रहा है। आप भी तो अपने धर्म को निभाइए।''

कुछ कट्टर पढ़े-लिखे ब्राह्मण बोले–''हमें नैतिकता का पाठ मत पढ़ाओ। गाँव की नैतिकता तो यही है कि रामदास गाड़ी पर बैठकर घर न जाएँ, ऐसा करने से रामदास की कोई पदवी नहीं घट जाएगी। इसके गाड़ी से जाने पर हमारा मान-सम्मान और मर्यादा मिट्टी में मिल जाएगी।''

रामदास सोनकर ब्राह्मणों और दलितों के बीच में खड़े थे। एक कलेक्टर अपने अर्दली सिपाही और ड्राइवर के सामने बेइज्जत हो रहा था। जातिवाद की देश में इतनी जहरीली जड़ें फैली हैं जो एक कलेक्टर को भी अपने जहर से नहीं बख्शतीं।

दलित इकट्ठे होते जा रहे थे। भीड़ बढ़ती जा रही थी। श्री सोनकर साहब बोले–''मैंने अभी तक आप लोगों का सम्मान किया है, लेकिन मेरे द्वारा किया आप लोगों का सम्मान मेरा और मेरे दलित भाइयों का अपमान बनता जा रहा है। अब मैं बरदाश्त नहीं करूँगा, जो भी निर्णय मेरे दलित भाई लेंगे मैं उसका पालन करूँगा।''

सोनकर साहब के बड़े भाई साहब मोहन लाल, नगर पालिका बिन्दकी के अध्यक्ष थे। वह भी आ गए थे।

मेरे फूफा और मोहनलाल ने जबरदस्ती सोनकर साहब को गाड़ी पर बैठाया। लपटा-झपटी ब्राह्मण करने लगे। मारपीट पर उतारू हो गए। लेकिन उसी समय बिन्दकी थाने का समस्त फोर्स वहाँ आ गया। सोनकर साहब की गाड़ी के सामने से ब्राह्मणों को हटाया। कुछ ब्राह्मण पुलिस को देखकर अपने आप भाग गए। सोनकर साहब गाड़ी में बैठकर ब्राह्मणों की गली से अपने घर आ गए।

आर.डी. सोनकर के खिलाफ षड्यंत्र

खटिक जाति के पथ प्रदर्शक श्री आर.डी.सोनकर से सम्बन्धित एक और दिलचस्प घटना आपको बताने जा रहा हूँ। श्री आर.डी. सोनकर की प्रथम पोस्टिंग, जिला मजिस्ट्रेट मैनपुरी के पद पर हुई थी। कलेक्टर के रूप में कार्य करते हुए उन्होंने अपनी छवि एक ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ व सभी वर्गों का काम करने वाले आई.ए.एस. अधिकारी के रूप में बना ली थी। यह सम्भवतः 1960 का वर्ष रहा होगा। सोनकर साहब की ख्याति पूरे मैनपुरी जिले में फैल गई थी। कमिश्नर की मीटिंग में सोनकर साहब को बहुत सराहा जाता था। कमिश्नर साहब सदैव, इस नए आई.ए.एस. की पीठ थपथपाकर हौसला हफजाई किया करते थे। सोनकर साहब का व्यक्तित्व आकर्षक है। लम्बे-चौड़े गोरे इंसान हैं। जिस तरह सुभाष चन्द्र बोस का व्यक्तित्व आकर्षक था वह अपनी तरफ सभी को अनायास खींच लेते थे। उसी तरह सोनकर साहब भी सैकड़ों के बीच अलग दिखाई पड़ते हैं। उनके स्मार्ट

रहने का एक कारण उनका बचपन से योगाभ्यास करना रहा है। लम्बी आयु पाने वाले लोग योगाभ्यास जरूर करते आए हैं।

श्री आर.डी. सोनकर की पत्नी श्रीमती कमला आंटी भी उन्हीं की तरह भव्य व्यक्तित्व वाली महिला हैं। वह बहुत ही दबंग हैं। अपने पति का हर सुख-दुख में उनका साथ देती हैं। मैनपुरी की घटना मैं आपको बताने जा रहा हूँ।

मैनपुरी का एस.पी. एक सवर्ण जाति का था, जो सोनकर साहब के अंडर था। उसके संस्कार कर्मकांडी व पूजापाठ वाले थे। सोनकर साहब की लोकप्रियता को देखकर वह चिढ़ जाता था। मन ही मन ईर्ष्या करने लगता था। सोनकर साहब जिले में कानून व्यवस्था चुस्त-दुरुस्त रखते थे। कभी-कभी एस.पी. की ढिलाई के कारण एकाध बड़ी घटनाएँ जिले में घट जाती थीं। सोनकर साहब पहले अपने अधीनस्थ अधिकारियों व कर्मचारियों को समझाते थे, फिर डाँटते थे। यदि वे नहीं सुधरे तो लिखित रूप में जवाब तलब किया करते थे। एस.पी. की इंट्री भी साल के अन्त में दिया करते थे। सोनकर साहब प्रशासन चलाने में सख्ती बरत दिया करते थे। कभी-कभी जब स्थिति कंट्रोल से बाहर हो जाती थी तब वह डाँट भी दिया करते थे। एक बार कानून व्यवस्था समीक्षा मीटिंग में उन्होंने एस.पी. को कड़े शब्दों में डाँट दिया। वह सवर्ण एस.पी. सोनकर साहब को अपना दुश्मन समझने लगा। एक दलित आई.ए.एस. द्वारा सवर्ण को डाँटना पूरे कौम की तौहीन मान रहा था। शायद वह ब्राह्मण था। वह सोनकर साहब के खिलाफ गुटबंदी करने लगा। कट्टर दरोगाओं को अपने बंगले में बुला कर सोनकर साहब के खिलाफ भड़काने लगा। उस समय पुलिस में अधिकतर सवर्ण जाति के दरोगा हुआ करते थे। जो जनता पर अंग्रेजों से ज्यादा क्रूरता दिखाते थे। सवर्ण एस.पी. ने सोनकर साहब के खिलाफ साजिश रच डाली। सोनकर साहब का जीवन ही समाप्त करने की ठान ली।

षड्यंत्र के तहत एस.पी. ने सोनकर साहब को सूचित किया—"मैनपुरी से 30 किलोमीटर दूर बिहड़ के कस्बे में हिन्दू-मुस्लिम दंगा होने वाला है। लोगों के मारे जाने की सम्भावना है।"

सोनकर साहब तुरन्त अपनी सरकारी गाड़ी में दो-तीन पुलिसवालों को लेकर चल दिए। श्रीमती कमला सोनकर उनको जब तक रोकतीं तब तक सोनकर साहब की गाड़ी निकल चुकी थी।

एक दलित इंस्पेक्टर ने एस.पी. की सारी योजना कमला सोनकर को बता दी थी जो कुचक्र एस.पी. सोनकर साहब की जान लेने के लिए रचा था। उसे उसने श्रीमती कमला सोनकर के सामने फाश कर दिया था।

श्रीमती कमला सोनकर तुरन्त अपनी प्राइवेट गाड़ी चला कर दंगा वाले स्थान पर पहुँच गईं। जीप में बैठे सोनकर साहब दंगा कंट्रोल करने के लिए सभी

पुलिस अधिकारियों को निर्देश दे रहे थे। एस.पी. सोनकर साहब को दूर से अपनी जीप में बैठा यह देख रहा था कि कब मौका मिले वह दरोगा को निर्देश दे कि वह सोनकर साहब पर गोली चलाकर उनको समाप्त कर दे। कलेक्टर की मृत्यु को किस तरह शासन के सामने पेश करे। इसी उधेड़-बुन में लगा था।

सोनकर साहब की जिन्दगी को खतरा था। सवर्ण एस.पी. अपने षड्यंत्र में कामयाब होता दिखाई दे रहा था। वह सोनकर साहब को हिन्दू-मुस्लिम दंगों के दौरान एक थानेदार की गोली से मरवा देना चाहता था। जो सादे कपड़ों में दंगाइयों के साथ था। एक धूर्त सवर्ण एस.पी. की क्रूर योजना सफल होने जा रही थी। वह सोनकर साहब को खटिक जाति का होने के कारण बरदाश्त नहीं कर पा रहा था। उसके बुजुर्गों ने सदैव दलितों पर शासन किया था। अब वे शासित नहीं होना चाहते थे। उनकी नसों में हिटलर-मुसोलिनी का खून बह रहा था। योग्य, कर्मठ, ईमानदार दलित आई.ए.एस. का खात्मा होने वाला था।

परन्तु श्रीमती कमला सोनकर दंगाग्रस्त क्षेत्र में पहुँचकर सोनकर साहब को जीप से खींचकर अपनी गाड़ी तक ले आईं और अपनी गाड़ी में बैठाकर बंगले ले गईं। सोनकर साहब की जान को उनकी पत्नी ने अपनी सूझ-बूझ से बचा लिया था।

दलित औरतों में बहुत ही सूझ-बूझ होती है। श्रीमती कमला सोनकर बहुत ही सतर्क थीं। उन्होंने सोनकर साहब से कह कर एक दलित इंस्पेक्टर को एक बड़े थाने का इंचार्ज बनवा दिया था। जहाँ वह पोस्टिंग चाहता था। एक जिलाधिकारी की पत्नी ने पुलिस विभाग में अपना आदमी फिट कर दिया था जो सोनकर साहब के विरुद्ध रचे जाने वाले षड्यंत्रों को तुरन्त बताता था। इसी दलित इंस्पेक्टर ने ही श्रीमती कमला सोनकर को एस.पी. के बुरे इरादों की सूचना दी थी।

आर.डी. सोनकर द्वारा पाठ्यक्रमों में दलित साहित्य शामिल कराना

श्री आर.डी. सोनकर बिन्दकी तहसील के सभी सोनकर बिरादरी के लिए एक गॉड फादर साबित हुए हैं। सबसे पहले आई.ए.एस. बनने वाले आर.डी. सोनकर ही थे। नेहरू इंटर कॉलेज बिन्दकी से पढ़कर इलाहाबाद विश्वविद्यालय गए और आई.ए.एस. हो गए। उनका अनुसरण केवल खटिकों ने ही नहीं किया बल्कि फतेहपुर जिले की अन्य जातियों के लोगों ने भी किया। वे भी आई.ए.एस. व पी.सी.एस./पुलिस आफिसर बने। श्री सोनकर साहब जहाँ-जहाँ सरकारी पदों पर रहे दलितों के उत्थान के कार्य करते रहे। जिला मजिस्ट्रेट, कमिश्नर, राज्यपाल के सलाहकार व उत्तर प्रदेश राज्य के लोकल बॉडीज के चुनाव आयुक्त रहे हैं। सदैव निर्धनों, निर्बलों, दलितों और पिछड़ों की भलाई के कार्यों में तेजी लाए। उनके

हित की योजनाओं को लागू किया। शायद यह बात बहुत कम लोगों को मालूम होगी कि जब वे महामहिम राज्यपाल उ.प्र. श्री मोतीलाल वोहरा के सलाहकार थे, शिक्षा विभाग के साथ-साथ बहुत सारे विभाग उनके पास थे। विश्वविद्यालयों में व सरकार के स्तर पर डॉ. अम्बेडकर के साहित्य के प्रचार व प्रसार के लिए अथक प्रयास किए। अधिकतर विश्वविद्यालयों में दलित साहित्य पाठ्यक्रम में सम्मिलित कराने में श्री सोनकर साहब का अथक प्रयास बहुत ही काबिलेतारीफ है।

खटिक व्याध ऋषि को प्रकाश में लाने वाले आर.डी. सोनकर

शायद त्रिकालदर्शी खटिक व्याध ऋषि के बारे में दलित साहित्यकार न जान पाते यदि आर.डी. सोनकर ने महाभारत के एक अध्याय से लेकर 'व्याधगीता' पुस्तक न लिखी होती। त्रिकालदर्शी, कर्मयोगी संत खटिक व्याध ऋषि पहले संत थे जो माँ-बाप की सेवा करना सभी धर्मों व कर्मों से बढ़कर मानते थे। आज के परिप्रेक्ष्य में संत व्याध ऋषि की शिक्षाएँ बहुत महत्व रखती हैं। जबकि आज की पीढ़ी अपने माँ-बाप से पीछा छुड़ाने के लिए उन्हें वृद्ध-आश्रमों में छोड़ आती है या उनको वृद्धावस्था में मरने के लिए अकेले छोड़ देती है। त्रिकालदर्शी व्याध ऋषि कर्मयोगी संत थे, जो कबीर, रैदास, नानू-पीपा की श्रेणी में आते थे। तीन कालों को जानने का ज्ञान केवल व्याध ऋषि में था। जबकि हमारे अन्य महान् दलित संतों में नहीं था। फिर भी इस महान् संत को क्यों भुला दिया गया? संत कबीर, रैदास, नानू-पीपा के साथ-साथ व्याध ऋषि के दर्शन को समाज में प्रचार की जरूरत है। ताकि आज की पीढ़ी अपने-अपने माँ-बाप के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझे और उनको तड़प-तड़प कर मरने के लिए अकेले न छोड़े।

मेरे प्रशासनिक सेवाओं के साक्षात्कार

एकाउंटेंट जनरल सेवा मध्य प्रदेश में ऑडिटर परीक्षा का मेरा इंटरव्यू हुआ। मैं अपने समस्त डाक्यूमेंटस लैमिनेशन कराके ले गया था। समस्त सदस्य एवं चैयरमैन बहुत खुश हुए, चेयरमैन ने मुझसे पूछा–

"आप इलाहाबाद विश्वविद्यालय से विधि स्नातक हैं।"

"यस सर!"

"आपके बी.ए. में कौन-कौन विषय थे।"

"इंग्लिश लिटरेचर, पोलिटिकल साइंस और प्राचीन भारतीय इतिहास।"

"आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में ही क्यों शिक्षा ग्रहण की।"

"इलाहाबाद विश्वविद्यालय एक प्रसिद्ध यूनिवर्सिटी है। यहाँ के पढ़े लड़के

अधिकतर आई.एस.एस. व पी.सी.एस. हो जाते हैं। मेरी तहसील बिन्दकी और फतेहपुर के लड़के काफी संख्या में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से पढ़कर अफसर हो गए हैं।"

"अगर आपको लोहिया, अम्बेडकर, गाँधी में से प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान देना हो तो क्या क्रम आप देंगे और क्यों?"

"मैं अम्बेडकर को प्रथम, लोहिया को द्वितीय और गाँधी को तृतीय स्थान दूँगा। अम्बेडकर ने दबे-कुचले और समाज से बहिष्कृत लोगों की आवाज उठाई थी। सवर्णों के सामने ऐसी आवाज उठाना अपनी जान गंवाने के बराबर था। सामाजिक कुरीतियों, विसंगतियों, छुआछूत को समाज से उखाड़ फेंकने के लिए जोरदार संघर्ष किया था। शायद वह विश्व के पहले जननेता थे। जिन्होंने सवर्णों के अत्याचारों से कराह रहे दलितों को मुक्ति दिलाने का द्वार खोला।

"लोहिया पिछड़ों को आर्थिक रूप से मजबूत बनाकर उनको राजनैतिक सत्ता दिलाना चाहते थे। ताकि पिछड़ों का सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक विकास हो। उनकी थियरी में पिछड़े वर्ग के लोग शासक हों उच्च वर्ग के लोग शासित।

"गाँधी अंग्रेजों द्वारा प्रताड़ित और अपमानित किए गए थे। वह शान्ति का मार्ग अपनाकर अंग्रेजों से बदला लेना चाहते थे। उनका व्यक्तिगत प्रतिशोध राष्ट्र का प्रतिशोध बन गया था। यदि गाँधी व्यक्तिगत रूप से अंग्रेजों द्वारा अपमानित न हुए होते तो वह गाँधी न होते। यह कहना पूर्णतया सत्य नहीं है कि भारत को आजादी दिलाने में केवल गाँधी का ही योगदान है। सुभाषचन्द्र बोस, भगत सिंह, आजाद व उधम सिंह के बिना आजादी सम्भव नहीं थी।"

चेयरमैन ने दुबारा प्रश्न किया–"आपने विलियम शैक्सपियर की मैकबेथ पढ़ा है।

"How Bernam-wood moved?"

"All the branches of the trees were cut and put on the heads. It was seen from the distance that the Jungle was moving?"

मैं उस परीक्षा में चुन लिया गया था।

मैं ग्रामीण बैंक के मैनेजर पद पर चुन लिया गया था। मेरी पोस्टिंग का लेटर फरूखाबाद के लिए आ गया था। सन् 1977 ई. में मैं रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया की परीक्षा में क्वाइन नोट एक्जामिनर की लिखित परीक्षा में भी सफल हो गया था। लेकिन मैंने रिजर्व बैंक की नौकरी करना ज्यादा बेहतर समझा, क्योंकि मैं उस समय आई.ए.एस. व पी.सी.एस. की तैयारी इलाहाबाद में रहकर कर रहा था। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया, कानपुर के गर्वनर श्री जैदी साहब थे। मेरा इंटरव्यू अन्य सदस्यों के साथ वही ले रहे थे। उन्होंने मेरे सर्टिफिकेट्स देखे। मेरी तहसील बिन्दकी है। श्री आर.डी. सोनकर साहब की भी तहसील बिन्दकी है। श्री

जैदी साहब सोनकर साहब के बहुत अच्छे दोस्त थे। उन्होंने मुझसे प्रश्न किया—"आप खटिक जाति के किसी ऐसे आदमी का नाम बताइए, जो कलेक्टर, कमिश्नर, पी.ए. टू गर्वनर रहा हो?"

मैंने उत्तर दिया—"श्री आर.डी. सोनकर!"

"क्या आप उनके रिश्तेदार हैं?"

"मैं उनका रिश्तेदार नहीं हूँ मैं उनकी तहसील का हूँ, वह मेरी जाति के हैं।"

"आप उनकी विशेषताएँ बताइए?"

"वह बहुत ही योग्य, कर्मठ, सरकार के प्रति बहुत ही समर्पित भाव से काम करने वाले आई.ए.एस. अधिकारी हैं।"

"उनकी कोई खास बात बताइए?"

"वह बहुत ही ईमानदार अधिकारी हैं!"

"क्या आप उन्हीं की तरह ईमानदारी से कार्य करेंगे?"

"यस सर!"

सोनकर साहब मेरे बहुत ही करीबी रिश्तेदार हैं। मैंने जानबूझकर सोनकर साहब को अपना रिश्तेदार नहीं बताया था। क्योंकि मैं अपनी योग्यता के आधार पर नौकरी में सेलेक्शन चाहता था। मैं सोनकर साहब के नाम का सहारा लेकर नौकरी नहीं पाना चाहता था।

आई.ए.एस. कोचिंग में चयन

मैं सन् 1977 ई. में आई.ए.एस. कोचिंग सेन्टर इलाहाबाद में सेलेक्ट कर लिया गया था। वहाँ पर भी मुझे इंटरव्यू का सामना करना पड़ा था। शायद वह समय देश में इमरजेंसी का था। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री स्व. हेमवती नन्दन बहुगुणा थे। इमरजेंसी के दौरान स्व. बहुगुणा, आर.डी. सोनकर को इलाहाबाद का डी.एम. बनाकर लाए थे।

आई.ए.एस. की कोचिंग में स्थान पाने के लिए देश भर के एस.सी./एस.टी.प्रतियोगी विद्यार्थी सम्मिलित हुए। देश भर में एस.सी./एस.टी. विद्यार्थियों के लिए केवल दो ही प्री. आई.ए.एस. कोचिंग सेन्टर हैं। पहला इलाहाबाद दूसरा मद्रास है। इलाहाबाद सबसे अच्छा सेंटर माना जाता है। वहाँ पर भी इंटरव्यू लिया गया। एक सदस्य ने मुझसे पूछा था—

"What qualities must be in an Administrator."

"All of the first an Administrator must be honest, strict and smart."

"I mean to say that all the schemes of the Government must be emplemented by the administrator honestly, strictly and boldly which are beneficiaries to the Down-trodden people, If the Administrator is strict and smart, his sub-ordinates will follow him."

मेरे उत्तरों को सुनकर चेयरमैन बहुत खुश हुए और मुझे चुनकर हिन्दुस्तान के टॉप 6 प्रतियोगियों के साथ पंत हॉस्टल की प्रथम विंग में स्थान दिया। लेकिन जब 6 माह बाद रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया, कानपुर से नौकरी के लिए नियुक्ति पत्र आया तो मैंने आई.ए.एस. कोचिंग छोड़ दी और रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया, कानपुर में नौकरी कर ली।

पी.सी.एस. का साक्षात्कार

मुझे पी.सी.एस. अलाइड का इंटरव्यू याद आ रहा है। लोक सेवा आयोग, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद में, मेरे इंटरव्यू लेने वाले बोर्ड के चेयरमैन माननीय आर्य जी थे। वह सबसे ज्यादा टफ इंटरव्यू बोर्ड था। बाद में पता चला अन्य इंटरव्यू बोर्डों की अपेक्षा इस बोर्ड द्वारा प्रतियोगियों को सबसे कम नम्बर दिए गए थे। मेरे इंटरव्यू बोर्ड में चेयरमैन आर्य जी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रोफेसर अग्रवाल थे। तीसरे मेम्बर शायद मनोविज्ञान के एक्सपर्ट थे। आर्य जी ने मुझसे पूछा—"उत्तर प्रदेश के पहाड़ी जिलों के नाम बताइए?"

"देहरादून, रानीखेत, पिथौरागढ़, चमोली, टिहरी, चम्पावत, नैनीताल आदि।"

प्रोफेसर अग्रवाल जी ने प्रश्न किया—"बताइए बनिया शराब पीता है कि नहीं?"

"बनिया शराब पीता है। शराब बहुत महंगी होती है। बनिया अधिकतर व्यवसाय करते हैं। उनके पास पैसा होता है। इसलिए महंगी शराब वही खरीद सकते हैं। इसलिए मेरे विचार से बनिया शराब पीता है।"

उन्होंने दुबारा प्रश्न किया—"पंडित शराब नहीं पीता है, तब भी गरीब होता है, लेकिन सरदार शराब पीता है, फिर भी मालदार होता है, क्यों?"

"पंडित मेहनत, मजदूरी, खेतीबाड़ी नहीं करता है। वह पोथी-पत्रा पढ़कर अपना जीवनयापन करता है। इसलिए शराब न पीते हुए भी गरीब होता है, जबकि सरदार बहुत मेहनतकश होता है। शराब पीते हुए भी काफी पैसा खेतीबाड़ी और अपने स्वरोजगार से अर्जित कर लेता है। इसलिए वह मालदार होता है।"

मैं पी.सी.एस. (अलाइड) सब-रजिस्ट्रार के पद पर चुन लिया गया था।

वास्तव में बनिया शराब नहीं पीता है। लेकिन मेरे तर्कों के सामने इंटरव्यू